जून-२०१६ ◆ वर्ष ५ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जून-२०१६

हर प्राणी के जन्म से पहले,
उसका भोजन है तैयार।
किसकी सधी व्यवस्था है ये ?
अन्नपूर्णा प्रभु का प्यार।
इसी प्रक्रिया को समझाया,
सत्यार्थप्रकाश में सविस्तार॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १०

हरदम
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११७
ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया
विक्रम संवत्
२०७३
दयानन्दाब्द
१९२

June- 2016

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २३

हलचल २४

०४	वेद सुधा
०६	पृथिवी टिके रहने संबंधी भ्रान्तियाँ
१०	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ४/१६
११	मातृभूमि का वीर सपूत
१४	पिता-शब्द के अंतर की ज्वाला
१५	माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या
१६	भारत भारती
१६	वैदिक परिवार शिविर
२२	संन्यासी की सहनशीलता
२५	कथा सरित- दो गरीब भाई
२७	स्वास्थ्य- घटाएँ अपना वजन
२६	सत्यार्थ-पीयूष- राजा और प्रजा

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - ०१

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

अहिंसापूर्वक धन संचय

न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्तं रयिर्नशत्। - साम. ८७८, ऋग्० ७।३२।२१

साधक जीविकोपार्जन के लिए जो भी कार्य करता है उनमें हिंसा का आश्रय लेकर, दूसरों को कष्ट पहुँचाकर, झूठी प्रशंसा से या छल कपट से धोखा देकर धनसंचय करता है, तो वह धन मोक्षधन की प्राप्ति नहीं कराता। हिंसा से प्राप्त सांसारिक धन, राज्य-श्री और उत्तम सामर्थ्य प्राप्त नहीं कर सकता।

स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना। अच्छा गच्छत्यस्तृतः॥

- ऋग्. १।४१।६

अतः साधक परमेश्वर से याचना करता है कि मुझे तो वह धन प्राप्त करवाइये जिससे मैं भवसागर से पार जा सकूँ और आपके दिव्य स्वरूप में विद्यमान अनासक्ति, परोपकार तथा मोक्षधन को प्राप्त कर सकूँ। उसे पता है कि अहिंसक ही उत्तम धन और पुत्रों को प्राप्त करता है।

यो वै भूमा तत्सुखम्। नाल्पे सुखमस्ति। भूमैव सुखम्।
यत्र नान्यत्पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद्विजानाति स भूमा।
गो अश्वमिह महिमेत्याचक्षते हस्तिहिरण्यं दासभार्यं क्षेत्र॥ - छान्दो. ७।२३-२५

नचिकेता तथा मैत्रेयी ने इन सांसारिक धनों को नश्वर समझकर अविनश्वर मोक्षधन की कामना की थी। नारद को समझाते हुए सनत्कुमार ने इस परमधन को 'भूमा' कहा है। वहाँ स्पष्ट किया है कि 'गाय, अश्व, हस्ति, सुवर्ण, दास, भार्या, भूमि और घर 'भूमा' नहीं हैं, आत्मप्रविष्ठ ब्रह्म ही 'भूमा' है। वही सुख का आधार है अतः सुख चाहने वाला उपासक अहिंसा से उपार्जित वित्त पर संतोष करे।

सार्वभौम अहिंसा

वैदिक संहिताओं में अहिंसा की शिक्षा ग्रहण करने का क्षेत्र विशाल है। चेतनमात्र से अहिंसा-जन्य सुख-शांति की कामना के साथ-साथ प्रकृतिस्थ अग्नि, जल, वायु, पृथिवी, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, विद्युत, पर्वत, समुद्र, मेघ , दिशा, दिन-रात, ऋतु, क्षेत्र, अन्नादि औषधि, वनस्पति, मन, बुद्धि, प्राण आदि से सुख तथा शांति की कामना की गई है। यह तभी संभव है जब साधक परमाणु से लेकर परमात्मा तक के सूक्ष्म तथा महान् तत्वों का ज्ञान वेदशास्त्रादि के अध्ययन से प्राप्त करे।

साधक प्रकृति के पदार्थों, मनुष्यों, गौ आदि पशुओं सभी से सुख एवं अहिंसा की कामना करता है। विज्ञ साधक इस ज्ञान से सम्पन्न हो विचारता है कि प्रकृति का प्रत्येक तत्व अहिंसक होकर परोपकार में तल्लीन है, पुनः मैं भी क्यों न इनसे शिक्षा ग्रहण कर अहिंसाव्रत का परिपालन करूँ- मैं किसी प्राणिविशेष को, किसी स्थान विशेष में तथा कालविशेष में क्यों मारूँ? ये तो मेरे लिए हितकारी हैं। प्रजापति की प्रजा हैं, जब मैं इन्हें जीवनदान नहीं दे सकता तो इन्हें विनष्ट करने का भी तो मुझे अधिकार नहीं, अतः सर्वथैव अहिंसा पालनीय है।

जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम्। - यो.२।३१, व्या. भा.

योगदर्शन में सार्वभौम अहिंसा पालन के लिए कहा है 'जाति अर्थात् मछली ही मारूँगा, ब्राह्मणों को नहीं मारूँगा, इसी प्रकार तीर्थ विशेष पर चतुर्दशी के दिन हत्या नहीं करूँगा अथवा देवताओं के निमित्त ही हत्या करूँगा।' इस पक्षपात को छोड़कर

ऐसी प्रतिज्ञा करना कि मैं कभी, किसी प्रयोजन के लिए किसी की हत्या नहीं करूँगा, ऐसे ही सत्य बोलने तथा चोरी न करने के प्रण को 'सार्वभौम महाव्रत' कहते हैं।

अहिंसा का फल

अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति। हिन्वान आप्यं बृहत्। - साम.५०८

सामवेदीय ऋचा में कहा है कि 'अहिंसनीय योगयज्ञ के द्वारा भक्तिरस का पान करता हुआ साधक, विश्वबन्धुत्व की भावना को प्राप्त कर लेता है।' उसे ब्रह्माण्ड में किसी से भय नहीं रहता। साधक वेद के शब्दों में प्रार्थना करता है कि अन्तरिक्ष से, द्युलोक से, पृथिवी लोक से, आगे-पीछे, ऊपर नीचे से हमें अभय प्राप्त हो। उसकी कामना होती है कि हमें मित्र से, शत्रु से, परिचित से, अपरिचित से, रात में और दिन में अभय प्राप्त हो, सारी दिशाएँ मेरी मित्र बन जाएँ।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं। - अथर्व. १६।१५।५

साधक अभय प्राप्ति की कामना करता हुआ अहिंसा व्रत को सिद्ध कर लेता है तो शचीपति परमात्मा उसे आगे पीछे से शत्रुओं से अभय कर देता है।

अहिंसासिद्ध साधक के लोक-परलोक दोनों कल्याणकारी हो जाते हैं। अहिंसाव्रती ही धर्मपूर्वक राज्य करते हैं। उत्तम सद्गृहस्थ भी जीवन को क्रोधरहित होकर, अहिंसासेवी होकर भोग सकता है। अहिंसा व्रत के आधार पर ही धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारों को प्राप्त किया जा सकता है।

ता वृधन्तावनु द्यून्मर्ताय देवावदभा। - ऋग्. ५।८६।५

परमात्मा का यह व्रत है कि वह हिंसारहित को ही प्रथम अंगीकार करता है। अन्य पुरुषों द्वारा भी वही सत्कार के योग्य है। योगदर्शन में कहा है कि अहिंसा की प्रतिष्ठा होने पर उपासक के पास रहने वाले सब प्राणियों का पारस्परिक वैरभाव समाप्त हो जाता है।

अवशिष्ट योगांगों की आधारशिला अहिंसा है, इसका परिपालन अपरिहार्य एवं सर्वप्राथमिक है। इसी हेतु महर्षि पतंजलि ने अहिंसा को प्रथम स्थान दिया है। वस्तुतः सत्यादि यम तथा नियमों का अनुष्ठान अहिंसा की सिद्धि के लिए होता है। यदि कोई असत्यभाषण, चौर-कर्म, व्यभिचार आदि करता है तो मानो वह हिंसा करता है और यदि सत्यादि का दृढ़ता से अनुष्ठान करता है तो समझो वह अहिंसा व्रत का ही पालन कर रहा है। इस प्रकार अहिंसा का अन्य यम नियमों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।

- डॉ. योगेन्द्र पुरुषार्थी
साभार (वेदों में योग विद्या)

अभी गत दिनों एक चर्चित व्यक्तित्व उदयपुर पधारे थे वे विश्व प्रसिद्ध न्यूमरोलोजिस्ट कहे जाते हैं। 'प्रारब्ध जाना जा सकता है तथा बदला भी जा सकता है', इस सम्मोहित कर देने वाली मान्यता में अंध-लिप्त लोगों के लिए कई ऐसी तथाकथित विज्ञान की शाखाएँ सदियों से खुल गयीं हैं जिन्हें आज के वैज्ञानिक वातावरण में भी अबाधित रूप से उत्कर्ष प्राप्त हो रहा है, उनमें से न्यूमरोलोजी भी एक है। अति संक्षिप्त में कहने का प्रयास करें तो व्यक्ति के नाम की जो स्पेलिंग होती है उसके प्रत्येक अक्षर के लिए एक अंक होता है जिनका योग उस व्यक्ति का नम्बर होता है। यही नम्बर उसके भाग्य का विधायक है। न्यूमरोलोजिस्टों का दावा है कि इसे बदल देने से उसका भाग्य भी परिवर्तित किया जा सकता है। एक बात और ज्ञातव्य है- न्यूमरोलोजी व्यक्ति के नाम के अंग्रेजी अल्फाबेट पर आधारित है। अंकों का निर्धारण व्यक्ति के नाम की अंग्रेजी स्पेलिंग के आधार पर ही किया गया है। इसका अर्थ यह भी निकलता है कि अंग्रेजी के उद्भव के पूर्व न्यूमरोलोजी का अस्तित्व ही नहीं था और यह भी चिन्त्य है कि आज भी जहाँ अंग्रेजी नहीं जानी जाती अथवा अन्य देशीय नाम जिनकी अंग्रेजी स्पेलिंग स्थिर होना संभव नहीं है वहाँ न्यूमरोलोजी का प्रयोग अगर असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। उदाहरण के लिए चेकोस्लोवाकिया की स्पेलिंग chekoslovaakiya भी लिखी जा सकती है जो कि अंग्रेजी नाम-लेखन के अनुसार अशुद्ध है। जब इस आधार पर अंक ज्योतिष का प्रयोग करेंगे तो परिणाम सही कैसे होंगे? यह शायद सत्य है कि अंग्रेजी विश्व में सर्वाधिक प्रयुक्त होती है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर ने केवल अंग्रेजी अल्फाबेट को ही हर किसी के भाग्य को निर्धारित करने का अधिकार दे दिया है। भला वह यह पक्षपात क्यों करेगा? कुछ लोग इस विधा को २५०० वर्ष पुरानी बताते हैं पर सत्य यह है कि तथाकथित अंकज्योतिष से सम्बन्धित किसी भी बेवसाईट पर आप अपना लकी नंबर निकालने जायेंगे तो सबसे पहले आपका नाम अंग्रेजी में डालने को कहा जाएगा अतः यह अंकज्योतिष सार्वभौम है तथा सभी भाषा-भाषियों पर समान रूप से लागू होता है यह कहना गलत होगा।

> **"यह नहीं माना जा सकता कि ईश्वर ने अंग्रेजी के अल्फाबेट्स को ही हर किसी के भाग्य के निर्धारण का अधिकार दे रक्खा है।"**

इसी प्रकार यह भी चिन्त्य है कि विश्व में अनेक प्रकार के कैलेण्डर हैं। कुछ सूर्य पर तो कुछ चन्द्र पर आधारित हैं। भारतीय कैलेण्डर है, चाइनीज है , माया कैलेण्डर है इनमें तारीखों की व्यवस्था भिन्न-भिन्न है तो फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि विधाता ने अंग्रेजी कैलेण्डर की तारीखों को ही दैवीय ताकत दी है कि वह विश्वभर के लोगों के भाग्य को तय करें। ये दो प्रश्न ही निष्पक्ष चिन्तन करने वालों के लिए पर्याप्त हैं कि वे अंक ज्योतिष की असारता को जान लें।

कुछ अंक ज्योतिषी नाम के साथ जन्मतिथि के अंकों को भी महत्त्व देते हैं और जैसा लिखा जा चुका है यह जन्मतिथि अंग्रेजी कलेंडर के अनुसार होनी चाहिए।

शुरुआत में अंक ज्योतिष अधिक क्लिष्ट नहीं थी उसे अब क्लिष्ट बनाया जा रहा है ताकि निर्वचनों की स्वेच्छानुसार व्याख्या की जा सके अन्यथा एक घटना के बारे में सभी अंक ज्योतिषिओं का निष्कर्ष एक ही होता जबकि हकीकत ठीक उलट है। अधिकांश भविष्यवाणियाँ गलत निकलती हैं। फिर भी मोटे तौर पर इतना तो पाठकों को समझ ही लेना चाहिए कि न्यूमरोलोजीकल अंकों का निर्धारण निम्न प्रकार किया जाता है-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
A	B	C	D	E	F	G	H	I
J	K	L	M	N	0	P	Q	R
S	T	U	V	W	X	Y	Z	

उक्त सारिणी के आधार पर उदयपुर का नंबर क्या है- UDAIPUR अर्थात् ३, ४, १, ६, ७, ३, ६, ३६, ६, इस प्रकार उदयपुर का न्यूमरोलोजूकल नंबर ६ है। अंततोगत्वा १ से लेकर ६ अंक तक प्राप्त करने का लक्ष्य होता है जो प्राथमिक अंक कहलाते हैं। अब व्याख्या का सवाल आता है, निर्वचन का प्रश्न आता है, यहाँ अलग-अलग न्यूमरोलोजिस्ट भिन्न प्रकार से व्याख्या करते हैं , उसका प्रमाण- अभी हाल में हुए T २० विश्वकप के संदर्भ में इनकी की गयीं भविष्यवाणियाँ देख लीजिये, अलग-अलग निष्कर्ष हैं।

EEnnadu.com के अनुसार एक प्रमुख अंक ज्योतिषी की भविष्यवाणी थी कि विश्वकप भारत द्वारा विजित करने की प्रमुख संभावना है जबकि आप सभी जानते हैं कि भारत सेमीफाइनल में ही बाहर हो गया। एक बेवसाईट Astrospeak.com ने स्पष्ट घोषणा की थी कि उक्त सेमीफाइनल में वेस्ट इंडीज नहीं वरन् भारत की विजय होगी। एक अन्य अंक ज्योतिषी जो गंजे भी हैं का दावा था कि भारत पाकिस्तान के मैच में पाकिस्तान निश्चित जीतेगा। यह भी मिथ्या प्रमाणित हुयी।

यह भी है कि अंक ज्योतिष में ज्यादातर प्राथमिक अंक (Single Digit) निकालकर उसके आधार पर व्याख्या करते हैं पर कभी-कभी प्राथमिक अंक से पूर्व की डबल डिजिट पर निर्वचन कर लेते हैं।

अब पुनः उदयपुर पधारे न्यूमरोलोजिस्ट महोदय की बात करते हैं। जब वे यहाँ पधारे अखबारों ने उनकी विशद् विरुदावली गायी कि अनेक टेलीविजन धारावाहिक तथा फिल्मों की स्पेलिंग में परिवर्तन कराके उन्हें बाक्स ऑफिस पर हिट कराने के पीछे उनकी सलाह ही थी। अनेक फिल्मी सितारे जिनके सितारे गर्दिश में चल रहे थे इनके अंकीय जादू से उनकी गाड़ी सरपट दौड़ने लगी। ऐसे एक नहीं अनगिनत उदाहरण हैं कि जिनमें स्पेलिंग में परिवर्तन करके सफलता के शीर्ष को पाया गया। एक बड़े आश्चर्य की बात है कि खोजी पत्रकारिता में महारत रखने वाले ये पत्र यूँ तो ऐसी-ऐसी खबरें निकाल कर लाते हैं कि आश्चर्य से दाँतों तले अंगुली दबानी पड़ती है। आजकल सरकारों, यहाँ तक कि न्यायालयों द्वारा भी अनेक मामलों में प्रसंज्ञान अखबारों, टी.वी. चैनलों की रिपोर्ट्स के आधार पर किया जाता है परन्तु उतने ही आश्चर्य की बात है कि ऐसे ज्योतिषियों की उपलब्धि में कसीदे पढ़ने वाले ये मीडिया हाउस तनिक से परिश्रम से जानी जा सकने वाली इनकी उन भविष्यवाणियों का जिक्र भी नहीं करते। अपवाद को छोड़कर हमने ऐसा नहीं देखा। जबकि असत्य होने वाली भविष्यवाणियाँ आधे से कहीं ज्यादा होतीं हैं। किसी ने सही लिखा है कि- 'When they predict something correctly, they use that as proof spreading the word as far as they can fling it and ignore or cover up the times their predictions were completely wrong'.

अनेक अंक ज्योतिषियों का कहना है कि न्यूमरोलोजी में नाम के अंक तथा जन्मदिन के अंक दोनों काम करते हैं। जन्मदिन के अंक तो आप बदल नहीं सकते इसलिए नाम की स्पेलिंग में परिवर्तन करके आप नाम व जन्मदिन के अंकों को हार्मोनी में ला सकते हैं। न्यूमरोलोजिस्ट का दावा है कि यह विधा न केवल जीवितों वरन् जड़ पदार्थों के सन्दर्भ में भी कार्य करती है।

उदाहरण के लिए अखबारों में छपी खबर के अनुसार यदि चंडीगढ़ में एक C तथा उदयपुर में एक E अथवा S अतिरिक्त लगा दिया जाय तो दोनों शहर समृद्धि तथा शान्ति के लिहाज से आकाश को स्पर्श करेंगे, ऐसा प्रसिद्ध न्यूमारोलोजिस्ट श्री का दावा है।

हम यहाँ कहना चाहेंगे कि चंडीगढ़ तथा उदयपुर सामान्य तौर पर शान्त तथा समृद्ध शहर हैं अगर हम विशेष रूप से उदयपुर की बात करें तो यह एक ऐसा शहर है जहाँ यद्यपि अपराध की दर जीरो प्रतिशत है, यह तो नहीं कहा जा सकता फिर भी यह शहर अपेक्षाकृत शान्त है। यहाँ का मुख्य व्यवसाय पर्यटन पर आधारित है जो अच्छा खासा चल रहा है। यहाँ की झीलें भी जो यहाँ की आन-बान-शान हैं

पिछले कुछ वर्षों से लबालब भर रही हैं, खूब शाही शादियाँ हो रहीं हैं, सबसे बड़ी बात स्मार्ट सिटी योजना के प्रथम चरण में ही उदयपुर ने अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है। यहाँ शिक्षा संस्थानों की भरमार है। ५-६ तो विश्वविद्यालय हैं, आई.आई.एम है, ५ चिकित्सा महाविद्यालय और दर्जन से ज्यादा नर्सिंग संस्थान हैं, एक शहर को और क्या चाहिए? अतः अरावली की नयनाभिराम उपत्यकाओं में बसे इस विश्वप्रसिद्ध शहर को शायद अपने नाम की स्पेलिंग में परिवर्तन की आवश्यकता नही है, परन्तु श्रीमान् भारत के कई राज्य पुराने घाव की तरह आपके रहते हुए भी टीस मारते रहें यह आश्चर्य की बात है। घुमाइए अपने स्पेलिंग परिवर्तन चमत्कार के रथ को इन अभागे राज्यों की ओर और बदल दो इनकी किस्मत। बहादो नफरत की जगह प्रेम और स्नेह की गंगा। काश्मीर आपकी ओर हसरत भरी नजरों से देख रहा है दिलाइये उसे फिर से 'धरती पर जन्नत' का खिताब। बताइये उसकी स्पेलिंग में क्या बदलाव किये जायँ। हमें विश्वास है कि आपके ट्रेक रिकार्ड को देखते हुए भारत सरकार अथवा जम्मू एवं काश्मीर की सरकार इसे स्वीकार कर लेगी।

यहाँ यह भी अंकित कर देना उचित होगा कि आप अंकों के अतिरिक्त लोगों द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों के रंग तथा हस्ताक्षरों में परिवर्तन करके भी भाग्य बदल देने में माहिर हैं। आपका कहना है कि राहुल गाँधी की वर्तमान स्थिति, उनके हस्ताक्षरों में अंत में जो डाट लगा है उसके कारण है। अगर वे उस डाट को हटा दें तो उनका राजनीतिक भविष्य चमक उठेगा। पता नहीं राहुल गाँधी इनकी सलाह न मानकर सहारा प्रमुख सुब्रतो राय जैसी गलती क्यों कर रहे हैं। जी हाँ सुब्रतो तथा सहारा का पूरा स्टाफ काले कपड़े पहनता है। न्यूमरोलोजिस्ट महोदय की सलाह थी कि वे इस ड्रेस कोड को तुरन्त बदल दें पर उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया। नतीजा आपके समक्ष है दो वर्ष से भी ज्यादा इस अरबपति को जेल के अन्दर हो गए अभी तक जमानत नहीं हुयी। गत दिनों में यही न्यूमरोलोजिस्ट फिर तिहाड़ जेल गए तो देखा वही काले कपड़े। उन्होंने फिर टोका। अब इनका कहना है कि सुब्रतो ने उनकी सलाह मानकर काले रंग का पूर्णतः परित्याग कर दिया है, यहाँ तक कि जिन घड़ियों का डायल काला है उनका भी परित्याग कर दिया है। अब ये अंक ज्योतिषी जी प्रसन्न हैं कि सुब्रतो को जमानत मिल जायेगी। पर हमारा प्रश्न है कि क्या यह बिना १०००० करोड़ डालर जमा कराए मिल जायेगी? क्या इनको रुपयों का जुगाड़ करने के लिए अपने यू.एस. तथा यू.के. के प्रसिद्ध होटल नहीं बेचने पड़ेंगे? अगर यह सब किये बिना जमानत मिलती है तो काले रंग के परित्याग करने का लाभ है अन्यथा तो जमानत वर्ष पूर्व ही मिली हुयी थी। बालीवुड के बड़े नाम यथा तीनों खान, अमिताभ जी, अजय देवगन तथा अक्षय कुमार आदि के अथवा अम्बानी बन्धुओं जैसे व्यवसाय जगत् की हस्तियों के उन्नयन की बात करना बेमानी है उन्हें आप क्या सफलता दिला रहे हैं वे तो आपके कार्य क्षेत्र में अवतरण से पूर्व से ही सफल हैं। परन्तु हमने उन लोगों की गिनती एक भी समाचार पत्र में नहीं देखी जो अंक ज्योतिष की सहायता से जीरो से हीरो बने। वस्तुतः एक शब्द है "मार्केटिंग" जो आज की तारीख में राजा है। ज्योतिषियों की तो बात क्या करें धर्मस्थल तथा धर्मगुरु भी इसके सहारे अपने-अपने भवसागर पार कर रहे हैं, अन्यथा पुरुषार्थ के अतिरिक्त प्रारब्ध-निर्माण एवं प्रारब्ध-फल को बदलने की सामर्थ्य किसी में नहीं है। जो कोई भी अपने और समाज के इस बौद्धिक सर्वनाश को रोकने में रुचि रखते हैं वे इन लोगों की असत्य सिद्ध हुयी भविष्यवाणियों का विवरण ज्यादा से ज्यादा प्रसारित करें क्यूँकि मीडिया हाउसों से यह अपेक्षा रखना बेकार है। आजकल आर्य समाज के कई ग्रुप सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं उन्हें चाहिए कि वे शोध करें और इन भाग्य निर्धारकों की भविष्यवाणियों की हकीकत जनता के समक्ष प्रस्तुत कर उन्हें सावचेत करें और 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए' के ऋषि -निर्देश की अनुपालना कर स्व-कर्तव्य का पालन करें ।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

पृथिवी टिके रहने संबंधी सभी भ्रान्तियों का निवारण वेदों में

खुशहाल चन्द आर्य

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में, पृथिवी के टिके रहने संबंधी जो भ्रान्तियाँ लोगों में फैली हुई हैं, उनका समुचित समाधान वेद मंत्रों के आधार पर किया हुआ है वह इस भाँति है:-

१. प्रश्न- पृथिवी को धारण कौन करता है? कोई कहता है- शेष अर्थात् सहस्र फन वाले सर्प के सिर पर पृथिवी है। दूसरा कहता है कि बैल के सींग पर। तीसरा कहता है कि किसी पर नहीं। चौथा कहता है कि वायु के आधार पर, पाँचवा कहता है कि सूर्य के आकर्षण से खिंची हुई अपने ठिकाने पर स्थित। छठा कहता है कि पृथिवी अपने भारी होने से नीचे-नीचे आकाश में चली जाती है इत्यादि में किस बात को सत्य मानें?

उत्तर- जो शेष सर्प और बैल के सींग पर धरी हुई पृथिवी स्थित है कहता है उसको पूछना चाहिए कि सर्प और बैल के माँ-बाप के जन्म के समय किस पर थी तथा सर्प और बैल आदि किस पर हैं?..... तो 'तेरी भी चुप मेरी भी चुप' और लड़ने लग जायेंगे। शेष का सच्चा अभिप्राय यह है कि 'जो बाकी रहता है उसको शेष कहते हैं।..... परमेश्वर उत्पत्ति और प्रलय से बाकी अर्थात् पृथक् रहता है इसी से ईश्वर को 'शेष' कहते हैं और उसी के आधार पर पृथिवी है। इसी भ्रम में पृथिवी शेष नाग के फन पर टिकी हुई है कह देते हैं।

सत्येनोत्तमिता भूमि:॥ यह ऋग्वेद के मंत्र का भाग है।

अर्थ- (सत्य) अर्थात् जो त्रैकाल्याबाध्य, जिसका कभी नाश नहीं होता उस परमेश्वर ने भूमि आदि सब लोकों को धारण किया है। नोटः- पृथिवी के टिकने का आधार परमेश्वर है इस अभिप्राय से तो यह अर्थ ठीक है। परन्तु इसका एक दूसरा अभिप्राय भी लग सकता है कि सत्य व्यवहार पर ही यह संसार चलता है यदि सत्य व्यवहार न रहे तो संसार का कोई कार्य भी नहीं चले। (ये मेरे स्वयं के विचार हैं भूल भी हो सकती है।)

उक्षा दाधार पृथिवीमुतद्याम्॥ यह भी ऋग्वेद का वचन है।

इसी (उक्षा) शब्द को देखकर किसी ने बैल का ग्रहण किया होगा क्योंकि उक्षा बैल का भी नाम है। परन्तु उस मूढ़ को यह विदित न हुआ कि इतने बड़े भूगोल के धारण करने का सामर्थ्य बैल में कहाँ से आवेगा। इसलिए 'उक्षा' वर्षा द्वारा भूगोल के सेचन करने से 'सूर्य' का नाम है। उसने अपने आकर्षण से पृथिवी धारण की है परन्तु सूर्यादि का धारण करने वाला परमेश्वर के बिना दूसरा कोई भी नहीं है।

२. प्रश्न- इतने-इतने बड़े भूगोलों को परमेश्वर कैसे धारण कर सकता होगा?

उत्तर- जैसे अनन्त आकाश के सामने बड़े-बड़े भूगोल कुछ भी अर्थात् समुद्र के आगे जल के छोटे कण के तुल्य भी नहीं है वैसे अनन्त परमेश्वर के सामने असंख्यात् लोक एक परमाणु के तुल्य भी नहीं कह सकते।

वह बाहर-भीतर सर्वत्र व्यापक है अर्थात्

'विभू: प्रजासु' - यह यजुर्वेद का वचन है।

वह परमात्मा सब प्रजाओं में व्यापक होकर सबको धारण कर रहा है। जो वह ईसाई के कथनानुसार कि ईश्वर चौथे आसमान पर रहता है, मुसलमान के कथनानुसार कि ईश्वर सातवें आसमान पर रहता है तथा पुराणियों के कथनानुसार कि ईश्वर क्षीर सागर या कैलाश पर्वत पर रहता है तो वह विभू न होता तो इस सब सृष्टि को धारण नहीं कर सकता।

क्योंकि बिना प्राप्ति के किसी को कोई धारण नहीं कर सकता। कोई कहे कि ये सब लोक परस्पर आकर्षण से धारण होंगे पुनः परमेश्वर के धारण करने की क्या अपेक्षा है? उनको यह उत्तर देना चाहिए कि यह सृष्टि अनन्त है या सान्त? जो 'अनन्त' कहे तो आकार वाली वस्तु 'अनन्त' कभी नहीं हो सकती और 'सान्त' कहे तो उनके पर-भाग 'सीमा' अर्थात् जिसके परे कोई भी दूसरा लोक नहीं है, वहाँ किस के आकर्षण से धारण होगा? जैसे समष्टि और व्यष्टि अर्थात् जब सब समुदाय का नाम वन रखते हैं तो समष्टि कहाता है और एक-एक वृक्षादि को भिन्न-भिन्न गणना करें तो व्यष्टि कहाता है वैसे सब भूगोलों को समष्टि गिनकर जगत् कहें तो सब जगत् का धारण और आकर्षण का कर्त्ता बिना परमेश्वर के दूसरा कोई भी नहीं। इसलिए जो सब जगत् को रचता है वही 'सदाधार पृथिवी द्यामुतेमाम्'

- यह यजुर्वेद का वचन है।

पृथिव्यादि प्रकाश रहित लोक लोकान्तर और पदार्थ तथा सूर्यादि प्रकाश सहित लोक और पदार्थ का रचन-धारण वही परमात्मा करता है।

इस लेख से हमें परमपिता परमात्मा की व्यापकता का ज्ञान होता है और यह ज्ञान हमें वैदिक धर्म को छोड़कर अन्य कोई भी तथाकथित धर्म नहीं दे सकता। इसलिए हम सब का यह पावन कर्तव्य बन जाता है कि हम सब वैदिक धर्मानुसार चल कर अपने जीवन को सफल बनावें और अपने अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करें।

गोविन्द राम आर्य एंड संस,
१८० एमजी रोड, दोतल्ला, कोलकाता

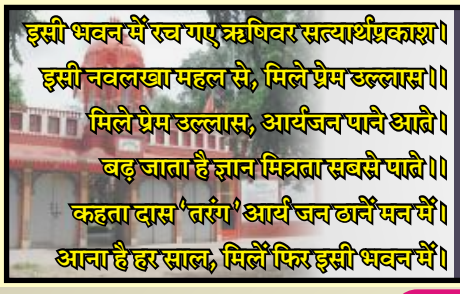

पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती की स्मृति में
आर्य सम्पादक सम्मेलन २३ व २४ जुलाई २०१६

नवलखा महल, उदयपुर में दिनांक २३ व २४ जुलाई को समस्त आर्य पत्र-पत्रिकाओं के मान्य सम्पादकों का सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। आर्य समाज के मन्तव्यों के अग्रप्रसारण में आर्य पत्र-पत्रिकाएँ, वर्तमान युग में, किस प्रकार अपनी प्रभावशाली भूमिका निभा सकती हैं इस विषय पर गहन मन्थन किया जावेगा। सम्पादकगण आमन्त्रित हैं।

- स्वागतोत्सुक, अशोक आर्य

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ६/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (चतुर्थ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	र्ण		२	ण्डा		३	ह्म	३	
	४	ख		५	च		६ स	६	६ ष
७ स		७ त	७				८		८ ण

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार कौनसी व्यवस्था होनी चाहिए?
२. मातङ्ग ऋषि जन्म से किस कुल के थे?
३. जो उत्तम विद्या-स्वभाव वाला है वह किस वर्ण के योग्य है?
४. उत्तम धर्मात्मा पुरुषों के मार्ग में चलने से क्या नहीं होता?
५. जो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको किस वर्ण में गिनना चाहिए?
६. किस प्रकार के पूर्वज हों जिनका अनुसरण किया जाय?
७. पाँच-सात पीढ़ियों के व्यवहार को क्या नहीं माना जा सकता?
८. विचार करना-कराना किस वर्ण का कार्य विशेष है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ४/१६ का सही उत्तर

१. एक	२. गोदान	३. गोत्र	४. छः
५. धातु	६. दुहिता	७. दूर देशस्थ	८. निरुक्त

सत्यार्थ सौरभ के मई माह वाली पत्रिका में सत्यार्थ प्रकाश पहेली ३/१६ के उत्तर की जगह १/१६ का उत्तर ही भूलवश रह गया। सही उत्तर दिया जा रहा है।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ३/१६ का सही उत्तर

१. विद्याकोश	२. शूद्र	३. मन्त्र	४. वेद	
५. देवासुर संग्राम	६. धनुर्वेद	७. व्यवहार		

''विस्तृत नियम पृष्ठ १८ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जुलाई २०१६

भारत की भूमि देवभूमि है। इस भूमि पर ऐसे वीर योद्धा हुए जिन्होंने हँसते हुए देश समाज और धर्म की रक्षा के लिए अपने बलिदान दिए लेकिन सिद्धान्तों के लिए किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। आज भी राजस्थान के घर-घर में महाराणा प्रताप का नाम गूँजता है। जन्म लेने वाले हर बालक के लिए यही कहा जाता है कि वह महाराणा प्रताप बने। माँ के लिए यही कहा जाता है माई एहड़ा पूत जण जो जीवन भर मातृभूमि की सेवा करते रहे। मातृभूमि के लिए सब कुछ समर्पण करने वाले महाराणा प्रताप को हम नमन करते हैं।

मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित चाहता हूँ, मातृ भू तुझको अभी कुछ और भी दूँ।

राजस्थान में कुम्भलगढ़ में उदयसिंह के घर ज्येष्ठ सुदी ३ सम्वत् १५९७ में बालक ने जन्म लिया। उस समय भारत पर मुगल बादशाह अकबर का शासन था। बड़े-बड़े महाराजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी। यहाँ तक कि शादी विवाह भी करने लगे। मेवाड़ एकमात्र राज्य था जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। अकबर की निगाहें चित्तौड़ पर थीं।

राणा प्रताप बचपन से ही बहादुर थे। माँ ने प्रताप को वीरता के संस्कार दिए थे। यह प्रतिज्ञा करवा दी थी कि प्रताप मेरे दूध की लाज रखना। मेवाड़ को सदा सुरक्षित रखना।

अकबर ने प्रताप से मिलने के बहुत प्रयास किए। आमेर के राजा मानसिंह को भेजा अधीनता स्वीकार करने के लिए कहा लेकिन प्रताप ने कहा कि अकबर से कह दो कि केवल रणक्षेत्र में ही फैसला होगा। मेवाड़ कभी पराधीनता स्वीकार नहीं करेगा। इस जवाब से मुगल बादशाह अकबर अपमानित हो उठा। अब वह लाखों सैनिकों को लेकर मेवाड़ की ओर चल पड़ा। राणा मानसिंह जैसे राजपूत सेनापति एवं शासक अकबर के साथ थे। दूसरी ओर महाराणा प्रताप व उनके सैनिक।

१८ जून १५७६ ई. को हल्दीघाटी के मैदान में भीषण युद्ध हुआ। प्रताप के वीर सैनिकों ने मुगल सैनिकों को गाजर मूली की तरह काट डाला। महाराणा प्रताप चेतक पर सवार होकर रणभूमि में इधर-उधर दौड़ लगाते हुए मानसिंह को ढूढ़ रहे थे।

पलक झपकते ही चेतक मानसिंह के हाथी के सामने पहुँच गया। उसने दोनों पैर हाथी के मस्तक पर रख दिए। महाराणा प्रताप ने बिजली की तरह अपना भाला मानसिंह पर दे मारा। महावत वहीं ढेर हो गया। मानसिंह खून से लथपथ हो गया- वह अपनी जान बचाकर रणक्षेत्र से भाग निकला।

हल्दीघाटी के युद्ध में हजारों सैनिक मारे गए। मारकाट से इतना रक्त बहा कि तालाब बन गया। आज भी यह स्थान रक्त तलाई के नाम से प्रसिद्ध है। अकबर युद्ध भूमि से लौट गया। कुछ वर्षों के बाद मेवाड़ राणा प्रताप के हाथों से निकल गया। अब जीवन के अंतिम वर्ष महाराणा प्रताप को जंगलों में बिताने पड़े लेकिन मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के अनेक प्रयास जारी रहे।

माई एहड़ा पूत जण, जेहड़ा महाराणा प्रताप।
अकबर सूतो ओझ के, जाण सिरहाने साँप।।

- कृष्ण बोहरा,
सेवानिवृत्त प्राचार्य, मुहल्ला जेल गराऊड़,
मकान नं ६४१, सिरसा,(हरियाणा)

शाकाहार संकल्प और पर्यावरण संरक्षण

– पर्यावरण दिवस पर विशेष –

हरे-भरे जीवनदायी ग्रह पर जहाँ हम निवास करते हैं, वहाँ से जीवों की कई प्रजातियाँ हमेशा के लिए विलुप्त हो रही हैं। ऐसा सदियों से होता आ रहा है। कई प्रजातियाँ इंसान के प्रादुर्भाव से पहले धरती को विदा कह गईं, जबकि कई प्रजातियाँ हमारे सामने विलुप्त हो गईं। इंसान के लालच और जरूरत के चलते जिस गति से इन दिनों जंगलों से जैव विविधता नष्ट की जा रही है, उसे देखते हुए लगता है कि जल्दी ही हमारा अस्तित्व ही संकट में आ जाएगा। जिस गति से जंगल और समुद्र जीवों से रीते होते जा रहे हैं, क्या उसका असर समूचे पर्यावरण पर नहीं पड़ रहा है? जाहिर है कि धरती पर जीवन को सुरक्षित रखना हमारी पहली प्राथमिकता है।

"Nothing will benefit human health and increase chances for survival of life on Earth as much as the evolution to a vegetarian diet.
Albert Einstein (Nobel prize 1921)"

आज दुनिया का अस्तित्व ही संकट में है और संकट का कारण है बिगड़ता पर्यावरण तथा ग्लोबल वार्मिंग। माना जा रहा है कि ग्रीनहाउस गैस ग्लोबल वार्मिंग की मुख्य कारक हैं और जानवर ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन करते हैं। वास्तव में पशु-पक्षी हमारे अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं और इनका आहार के रूप में भक्षण प्रकृति विरोधी है। निश्चित तौर पर हर प्रकृति विरोधी बात पर्यावरण विरोधी होती है, जहाँ तक मांसाहार की बात है इसके लिए पशुओं की फार्मिंग पर्यावरण विरोधी है।

ब्रेंट फोर्ड के सांसद लार्ड स्टर्न जोर देकर कहते हैं कि शाकाहारी भोजन ही पृथ्वी को विनाश से बचा सकता है। लार्ड स्टर्न का तर्क है कि मांस का सेवन करने से जैविक चक्र तो बाधित होता ही है, साथ ही साथ मीट की प्रोसेसिंग में पानी का अनहद उपयोग होता है और ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी। इससे पृथ्वी के स्रोतों का इस्तेमाल कई गुना बढ़ जाता है।

'शाकाहार से पर्यावरण संरक्षण' इस विचारधारा पर आधारित है कि जन उपभोग के लिए मांस उत्पाद और पशु उत्पाद खाद्य पर्यावरण की दृष्टि से अरक्षणीय होते हैं। २००६ में संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर किए गए एक अनुसंधान के अनुसार, दुनिया में पर्यावरण सम्बन्धी दुर्दशा में सबसे बड़े योगदान कर्ताओं में से एक मवेशी उद्योग है। मांसाहारी खाद्य पदार्थों की आपूर्ति के लिए आधुनिक तरीकों से पशुओं की तादाद बढ़ाने से बहुत ही बड़े पैमाने पर वायु और जल प्रदूषण, भूमि क्षरण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता को नुकसान हो रहा है। निष्कर्ष में यह तथ्य उभर कर आया कि स्थानीय से लेकर वैश्विक प्रत्येक स्तर पर, पर्यावरणीय समस्याओं में सबसे महत्वपूर्ण योगदान कर्ताओं में पशुपालन क्षेत्र का स्थान एकदम से शीर्ष पर दूसरा या तीसरा है।

इसके अलावा, पशु फार्म ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के बड़े स्रोत हैं और दुनिया भर में १८ प्रतिशत ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, जिसे CO_2 के समकक्ष मापा गया है, के लिए ये पशु फार्म ही जिम्मेवार हैं। तुलनात्मक रूप से, दुनिया भर के सभी परिवहनों (जहाजों, सभी की गाड़ियों, ट्रकों, बसों, ट्रेनों, जहाजों और हवाई जहाजों समेत) से उत्सर्जित CO_2 का प्रतिशत १३.५ है। पशु फार्म मानव संबंधित नाइट्रेस ऑक्साइड का उत्पादन ६५ प्रतिशत करता है और सभी मानव प्रेरित मीथेन का प्रतिशत ३७ है। जो लगभग २१ गुना अधिक है। मीथेन गैस के ग्लोबल वार्मिंग पोटेंशियल

(GWP) की तुलना में कार्बन डाइ ऑक्साइड और नाइट्रेस ऑक्साइड का GWP २९६ गुना है।

चारे पर निर्भर पशुओं की तुलना में अनाज पर पोषित पशुओं को कहीं अधिक पानी की जरूरत पड़ती है। यूएसडीए (USDA) के अनुसार, फार्म पशुओं को खिलाने के लिए उगाई फसलों की पैदावार के लिए पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका की लगभग आधी जल आपूर्ति और ८० प्रतिशत कृषि भूमि के पानी की जरूरत होती है। इसके अतिरिक्त, अमेरिका में भोजन के लिए पशुओं को बड़ा करने में ९० प्रतिशत सोया

"2,500 gallons of water are needed to produce 1 pound of beef."

की फसल, ८० प्रतिशत मक्के की फसल और ७० प्रतिशत कुल अनाज की खपत हो जाती है।

शाकाहार को बढ़ाने में एक जापानी वैज्ञानिक के प्रयोग भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। इन प्रयोगों में सिद्ध किया गया है कि एक किलो बीफ के उत्पादन के साथ ३६.४ किलो कार्बन डाइऑक्साइड भी उत्पन्न होती है। यह गैस ग्रीनहाउस प्रभाव के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है।

पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने इसीलिए कहा था कि यदि दुनिया बीफ (गाय का मांस) खाना बन्द कर दे तो कार्बन उत्सर्जन में नाटकीय ढंग से कमी आएगी और ग्लोबल वार्मिंग में बढ़ोतरी धीमी हो जाएगी। सौभाग्य की बात है कि भारत में गौमांस (बीफ) का ज्यादा चलन नहीं है। मांस के ट्रांसपोर्टेशन और उसे पकाने के लिए इस्तेमाल होने वाले ईंधन से भी ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन होता है। इतना ही नहीं, जानवरों के मांस से स्वयं भी कई प्रकार की ग्रीनहाउस गैसें उत्पन्न होती हैं जो वातावरण में घुलकर उसके तापमान को बढ़ाती हैं।

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण के क्षेत्र में काम कर रहे संगठन 'ग्रीनपीस' के नीति सलाहकार श्रीनिवासन के अनुसार शाकाहार अपनाने से अप्रत्यक्ष तौर पर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दिया जा सकता है। उनके मुताबिक मांसाहार के अधिक प्रचलन के कारण कहीं न कहीं वातावरण में कार्बनडाई ऑक्साइड जैसी गैसों का उत्सर्जन बढ़ रहा है। इसलिए मांसाहार जलवायु परिवर्तन में भूमिका निभा रहे हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि मांसाहार का बढ़ता प्रचलन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर जलवायु परिवर्तन और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार है। इससे बचाव और पर्यावरण संतुलन के लिए विशेषज्ञ शाकाहार को अपनाने का सुझाव देते हैं। वास्तव में पर्यावरण की सुरक्षा हमारे अस्तित्व के लिए जरूरी है। और शाकाहार इसकी एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। अगर हम गम्भीरता से पर्यावरण संरक्षण की बात करते हैं तो हमें शाकाहारी होना चाहिए।

साभार- निरामय

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं "सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ" के बारे में दर्शकों के विचार

यह प्रदर्शनी अद्भुत है। वर्तमान काल में समाज में विभिन्न प्रकल्पों एवं प्रयासों द्वारा भारत की दैवीय संस्कृति की सांस्कृतिक विरासत पर कुठाराघात हो रहा है। उसके अन्तर्गत यह प्रदर्शनी मानव समाज अर्थात् मनुष्य मात्र के पथ प्रदर्शन के लिये एवं कल्याण के लिये मील का पत्थर सिद्ध होगी।

– जयप्रकाश रावल, सिरोही

यह सब बहुत अच्छा व ज्ञानवर्धक है यह समाज के लोगों को ज्ञान बढ़ाने, सच्चाई अपनाने, क्रान्तिकारी बनने की प्रेरणा देता है। यह सब पढ़कर बहुत अच्छा लगा।

– चन्द्रवीर, हरियाणा

We have seen this historical exhibition. It is very good. All about history which is my favourite subject.

- Ritvik. N., Hariyana

फादर्स-डे पर विशेष

पिता-शब्द के अंतर की ज्वाला

मत हमसे पूछिए कि कैसे जिए पिता।
बूँद-बूँद से भरा किए घट खुद खाली होकर
कांटे-कांटे जिए स्वयं हमको गुलाब बोकर,
हमें भगीरथ बन गंगा की लहरें सौंप गए,
खुद अगस्त्य बन सागर भर-भर आँसू पिए पिता।।
झुकी देह जैसे झुक जाती फल वाली डाली,
झुक-झुक अपने बच्चों की ढूँढ़े हरियाली,
लथपथ हुए पसीने से लो, कहाँ खो गए आज
थके हुए हमको मेले में कांधे लिए पिता।।
बली बने तो विहँस दर्द के वामन न्यौत दिए,
कर्ण बने तो नौंच कवच कुंडल तक दान किए,
नीलकंठ विषपायी शिव को हमने देखा है
कालकूट हो या कि हलाहल हँस-हँस पिए पिता।।
तुम क्या जानो पिता-शब्द के अंतर की ज्वाला,
कितना पानी बरसाता बादल बिजली वाला,
अंधकार में दीपावलि के पर्व तुम्हीं तो थे
घर आँगन देहर पर तुम ही जलते दिए पिता।।

मंदिर मस्जिद गिरजा, गुरुद्वारों में क्या जाना,
क्या काबा, क्या काशी-मथुरा बस मन बहलाना
जप तप जंत्र मंत्र तीरथ सब झूठे लगते हैं
ईश्वर स्वयं सामने अपने आराधिए पिता।।
कुशल-क्षेम पूछने स्वप्न में अब भी आते हैं,
देकर शुभ आशीष पीठ अब भी सहलाते हैं,
हम भी तुम से लिपट-लिपट कर बहुत-बहुत रोए
देखो अंजुलि भर-भर आँसू अर्पण किए पिता।
मौन हुए तो लगा कि मीलों-मीलों रोए हैं,
शरशैया पर जैसे भीष्म पितामह सोए हैं,
राजा शिवि की देह हड्डियों में दधीचि बैठा
दिए-दिए ही किए अंत तक कुछ ना लिए पिता।।
हमसे मत पूछिए, चिता आँखों में जलती है
हमसे मत पूछिए हमारी जान निकलती है
हमसे मत पूछिए कलेजा कैसे फटता है
बिना तुम्हारे फटे कलेजे किसने सिए पिता।।

- कविवर विष्णु विराट

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या

– आशा गुप्ता

एक शिशु और माँ का रिश्ता अत्यन्त आत्मीय व महत्त्वपूर्ण होता है। माँ न केवल बच्चे को जन्म देती है अपितु यथासंभव अच्छी प्रकार से उसका पालन-पोषण भी करती है। यह तथ्य भी महत्त्वपूर्ण है कि माँ के स्वास्थ्य का भी बच्चे के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यदि माँ पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं होगी तो बच्चा भी पूरी तरह से स्वस्थ नहीं रह पाएगा। यदि नन्हे शिशु को गर्मी-सर्दी, जुकाम व अन्य रोगों से बचाना है तो माँ को भी गर्मी-सर्दी, जुकाम व अन्य रोगों से बचाना ही नहीं उसे पूर्ण विश्राम, संतुलित भोजन व उचित परिवेश उपलब्ध करवाना भी अनिवार्य होगा। मनुष्य व धरती माँ के बीच भी तो एक नन्हे शिशु व माँ का रिश्ता ही है। यह पृथ्वी भी हमारी माता है। हम भारत को भारत माता कहते हैं। अथर्ववेद में कहा गया है कि **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'** वास्तव में समस्त पृथ्वी ही हमारी माता है।

जिस प्रकार जन्मदात्री माता हमारा पालन-पोषण करती है उसी प्रकार से पृथ्वी भी प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से हमारा पालन-पोषण करती है। उसमें उत्पन्न अन्न, फल-फूल व मेवे हमारा आहार बनते हैं। उसमें प्रवाहित होने वाली नदियों के जल से हमारी प्यास बुझती है। पृथ्वी के वायुमंडल में उपस्थित ऑक्सीजन हमारे जीवित रहने के लिए अनिवार्य है जो पृथ्वी पर उगने वाले पेड़-पौधों व वनस्पतियों के द्वारा ही प्रदान की जाती है। उसकी धूल में लोट-लोटकर ही हम बड़े होते हैं। पृथ्वी की ऊपरी सतह अर्थात् मिट्टी स्वयं उपचारक शक्ति से युक्त होती है। लेकिन आज ये रिश्ता लगातार कमजोर पड़ता जा रहा है। इसमें अनेक दरारें पड़ चुकी हैं। इसका सीधा असर मनुष्य के पोषण व परिवेश पर पड़ रहा है।

यदि धरती माँ का स्वास्थ्य भी पूरी तरह से बिगड़ गया तो उसकी संतानों अर्थात् मनुष्य का न केवल भौतिक स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा अपितु उसका जीवित रहना ही असंभव हो जाएगा। धरती माँ के स्वास्थ्य से क्या तात्पर्य है? धरती माँ के स्वास्थ्य से तात्पर्य है उसकी ऊपरी सतह व वायुमंडल के स्वास्थ्य अथवा शुद्धता से। आज हमारे भूमंडल के पाँचों तत्त्व धरती, जल, अग्नि, वायु व आकाश पूरी तरह से प्रदूषित हो चुके हैं। पृथ्वी की ऊपरी सतह अर्थात् भूमि पर अनेक प्रकार के प्रदूषित पदार्थों व कूड़े-कचरे के ढेर लगे हैं। मानव द्वारा उत्पन्न कूड़े का प्रबंधन एक बड़ी समस्या बन गई है। वनों की बेतहाशा कटाई व खनन के कारण परिस्थिति बुरी तरह से प्रभावित हुई है। जैवविविधता नष्ट हो रही है। उद्योगों से निकला कचरा व रासायनिक पदार्थ भूमि की उपजाऊ परत, नदियों व भूमिगत जल को बुरी तरह से प्रभावित कर रहे हैं।

ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण समुद्रों का जल स्तर निरंतर बढ़ता जा रहा है जिसके कारण दुनिया के कई खूबसूरत शहरों को समुद्र में डूब जाने से कोई नहीं बचा पाएगा। उद्योगों व वाहनों के जहरीले धुएँ से आज दिल्ली, मुम्बई ही नहीं देश व दुनिया के सभी बड़े शहरों की हवा इस कदर खराब हो चुकी है कि इन शहरों में लोगों का साँस लेना भी मुश्किल होता जा रहा है। ऑक्सीजन के साथ-साथ अन्य जहरीली गैसें भी मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होकर अनेक विकारों को जन्म दे रही हैं। कार्बनडाई ऑक्साइड जैसी गैसें अधिक मात्रा में हमारे रक्त में मिल जाने के कारण हमारी कार्य क्षमता में निरन्तर कमी आती जा रही है। इस जहरीली हवा में साँस लेने के कारण बच्चे, बूढ़े बीमार ही नहीं स्वस्थ नवयुवक भी थके-थके से लगते हैं। इसके साथ अनेक अन्य रोग भी हम पर आक्रमण कर रहे हैं और प्रदूषण के कारण रोगों के ठीक होने की संभावनाएँ भी लगातार कम होती जा रही हैं।

वो दिन दूर नहीं दिखता जब हर समय मास्क लगाकर रहना पड़ेगा। लेकिन पृथ्वी के वायुमंडल की ओजोन परत का क्या करेंगे? पृथ्वी के वायुमंडल में आजोन की जो परत है वह सूर्य से आने वाली घातक पराबैंगनी किरणों व अन्य हानिकारक गैसों को पृथ्वी पर आने से रोक कर हमारी रक्षा करती है। उसमें भी छेद हो चुका है। जीवनदायिनी धरती माँ और उसकी संतानों को स्वस्थ बनाए रखने और रोगों से बचाए रखने के लिए धरती माँ का स्वास्थ्य ठीक करना अनिवार्य है। इसके लिए हमें अपने निरंकुश उपभोग पर लगाम लगाकर पृथ्वी व उसके परिवेश को नष्ट होने से बचाना होगा। हमें अपरिग्रह का पालन करना होगा। साथ ही वाहनों की संख्या को एकदम से नियंत्रित करना भी अनिवार्य है अन्यथा वाहन तो होंगे लेकिन वाहनों को चलाने वाले नहीं रहेंगे। अस्तु

ए.डी.-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४

चलभाष- ०९३१०१७२३२३, Email: srgupta54@yahoo.co.in

भारत भारती अर्थात् भारत के जन-जन की वाणी। भारत की भाषा जो पूरे देश में बोली और समझी जाती है। किसी सम्पूर्ण राष्ट्र की एक भाषा उसकी पहचान एवं उसके दृढ़ संगठन की आधार होती है। भारत जैसे विविधता पूर्ण देश में अनेक भाषाओं का होना स्वाभाविक है। यह हमारी विविधता में एकतामयी संस्कृति की विशेषता है। प्राचीन भारत में एक ही प्रमुख भाषा संस्कृत थी। कश्मीर से दक्षिण भारत तक तथा पश्चिम के मरु प्रदेश से पूर्व में बंगाल तक संस्कृत भाषा का प्रचलन था। सम्पूर्ण भारत में इस भाषा, व्याकरण, साहित्य दर्शन, काव्य-नाटक आदि की रचनाओं ने देश का गौरव बढ़ाया है। ज्ञान विज्ञान के ये ग्रन्थ आज भी विश्व वाङ्मय में शिरोमणि हैं।

वर्तमान समय में हिन्दी हमारे राष्ट्र की प्रमुख भाषा है। इसे ही मातृभाषा का गौरव प्राप्त होना चाहिए। किन्तु जिस गौरव में प्राचीन भारत में संस्कृत भाषा की प्रतिष्ठा थी, वह गौरव आज सर्वसम्मति से हिन्दी को प्राप्त नहीं है। बंगाल में बंगला भाषा सर्वोपरि है तो दक्षिण में दक्षिण की भाषायें। अन्यत्र भी कुछ इसी प्रकार की स्थिति है। इससे भी विकट स्थिति यह है कि अंग्रेजी सभ्य समाज की पहचान बनती जा रही है। अंग्रेजी में बात करना सुशिक्षित और संभ्रान्त होने का परिचायक बन रहा है। जो हिन्दी भाषी राज्य हैं उनमें भी स्वयं को सुशिक्षित एवं परिष्कृत समझने वाले महानुभाव हिन्दी का प्रयोग नहीं करते, अभिमान के साथ अंग्रेजी में वार्तालाप करते हैं। घरों में जनसाधारण द्वारा जो हिन्दी बोली जाती है, उसमें अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग होता है। जैसे 'हैण्ड वॉश कर लो' 'टीथ क्लीन करो', 'वाटर वेस्ट कर दिया' आदि में केवल क्रियापद हिन्दी में होता है। आशा की एक विशेष किरण यह है कि वर्तमान समय में बालकों के नाम अर्ध्य, अस्मि, श्रुति, स्वस्ति आदि हिन्दी भाषा विशेषकर संस्कृतमयी हिन्दी भाषा के हैं। विद्यार्थियों को सौ तक गिनती हिन्दी में नहीं सिखाई जाती है। अंग्रेजी के माध्यम से अध्ययनरत होने के कारण विद्यार्थियों को हिन्दी बहुत कठिन लगती है। परीक्षाओं में हिन्दी भाषा में उनके अंक भी कम आते हैं। इस कारण हिन्दी सीखने और पढ़ने का उनका उत्साह नहीं रहता। कोई भी भाषा वास्तव में प्रयोग और व्यवहार तथा भाषण की सरलता से सीखी जा सकती है। इसलिए हम सबका कर्तव्य है कि हम व्यवहार और भाषण में शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करें। यदि हम अंग्रेजी बोलने में हिन्दी के शब्द बीच-बीच में अनावश्यक रूप से नहीं बोलते हैं तो हिन्दी को भी इतने ही सम्मान के साथ शुद्ध रूप में अपनी बोलचाल में प्रयोग में लायें। हिन्दी के पास विपुल शब्द भण्डार और समृद्ध साहित्य है। संस्कृत से इसकी समीपता है। इसे ही हमारी 'भारत-भारती' होने का अधिकार है। वर्तमान समय में हमारे देश की अस्मिता इसी भाषा में है।

मध्यकाल में भारत की स्वाधीनता के पुरोधा, देश के नवनिर्माण के स्वप्नद्रष्टा, सामाजिक समरसता तथा धार्मिक सुधारों के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती की मातृभाषा गुजराती थी। संस्कृत भाषा के वे प्रकाण्ड पंडित थे, लेकिन सम्पूर्ण राष्ट्र के हित एवं संगठन के लिए उन्होंने हिन्दी भाषा को महत्व दिया। उन्होंने अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कार विधि आदि की हिन्दी भाषा में रचना की। इतना ही नहीं वेदों का ज्ञान जन-जन तक प्रसारित करने के लिए वेद मंत्रों के शब्दार्थ सहित अर्थ और भावार्थ लिखते हुए भाष्य लिखे।

एक समय था जब हमारे देशवासी अंग्रेजों की दासता से भारत को मुक्त कराने के लिए अपने पद प्रतिष्ठा और तन-मन-धन को न्यौछावर कर रहे थे। धर्म, जाति, क्षेत्रीयता और भाषा आदि के भेदभाव मिटाकर एक साथ

स्वाधीनता आन्दोलन में विदेशी शासकों के क्रूर अत्याचारों को दृढ़ता से सहन करते हुए स्वाधीन भारत के सपने देखते थे। सबमें सामूहिक उत्साह जगाने वाले नारे जय हिन्द, भारत माता की जय, जय भारत, वन्दे मातरम् आदि अपनी भारत भारती में होते थे। अण्डमान-निकोबार के टापू पोर्ट ब्लेयर में बनी सेल्यूलर जेल उन स्वाधीनता के दीवानों की कठोरतम यातनाओं की केन्द्र थी। इसे काले पानी की सजा कहा जाता था। काला अर्थात् काल मृत्यु, जिसका साक्षी चारों ओर समुद्र का पानी था। इस जेल में अपनी मातृभूमि से दूर समुद्र के बीच में भूमि पर मृत्यु से भी भयानक यातनाओं और अत्याचारों की व्यवस्था थी। यह जेल देशप्रेमियों के हौंसले और उन पर हो रहे अमानवीय अत्याचारों की कथा व्यथा है। जेल सप्तकोणीय है जिनमें कैदियों के रहने के कक्ष हैं। बीच में केवल एक आने जाने का रास्ता है। छोटे छोटे कक्षों में सामने लोहे की जाली का दरवाजा है। दूसरी ओर दीवार पर छोटा सा रोशनदान है। कक्ष में कोई खिड़की नहीं है। इस जेल में वीर सावरकर अपने ६८० साथियों के साथ रहे थे। यदि कोई कैदी मर गया तो उसे पत्थर बाँधकर समुद्र में फेंक दिया जाता था। कोल्हू में बैल की तरह जोतकर एक दिन में नारियल का एक मण तेल निकालना पड़ता था, जो बैल के लिए भी संभव नहीं था। तेल में कमी होने पर या विरोध करने पर पीठ पर

कोड़ों की मार और खाना बंद। फांसी देने की भी व्यवस्था थी। वर्तमान समय में ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम में उन कैदियों पर पड़ने वाले कोड़ों की ध्वनि तथा उनकी चीख पुकार सुनना भी असहनीय लगता है। जिन देशभक्तों से यातना सहन नहीं होती थी, वे आत्महत्या की बात करते थे। धैर्यवान साथी समझाते थे कि हमारा जीवन देश की स्वाधीनता के लिए है। हम इसे नष्ट नहीं कर सकते। वे वन्दे मातरम् और जय हिन्द के नारों से एक महान् उद्देश्य के लिए इस कठोर यातनापूर्ण जीवन को जीने का उत्साह जगाते थे।

वर्तमान समय में संभवतः उन शहीदों के बलिदानों का यह प्रभाव है कि राष्ट्र के इन सुदूरवर्ती टापुओं में हमें राष्ट्रीय एकता, प्रेम, संगठन और अतिथियों के प्रति स्नेहभाव और मान सम्मान के दर्शन होते हैं। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यहाँ हमारी भारत भारती हिन्दी भाषा का बोलचाल और व्यवहार में सुन्दर प्रयोग दिखाई देता है। यहाँ के निवासियों को इस बात का दुःख है कि भारत के नक्शे में इस भारत प्रेमी भूभाग को प्रायः दिखाया ही नहीं जाता। इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। यहाँ के अधिकतर निवासी दक्षिण भारत तथा बंगाल के हैं। वे अपने घरों में अपनी प्रादेशिक भाषा बोलते हैं। लेकिन घर से बाहर सब लोग शुद्ध हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। यहाँ के संग्रहालयों के नाम समुद्रिका, सागरिका आदि हैं। हम सब इसी तरह हिन्दी भाषा को अपना लें तो हमारी राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ होगी।

वर्तमान समय में देश मे आरक्षण का तूफान खड़ा है। 'लूट सके तो लूट' वाली शोचनीय स्थिति बनती जा रही है। कभी गुर्जर आन्दोलन तो कभी जाट आन्दोलन या कोई अन्य उत्पात। इन आन्दोलनों में राष्ट्रीय सम्पत्ति का घोर विनाश हो रहा है। रोडवेज बसों को जलाना, मालगाड़ी जलाना, रेल गाड़ियों को रोकना, सरकारी भवनों में आग और तोड़फोड़ जैसे अमानवीय उत्पात बढ़ते जा रहे हैं। सबसे बड़े दुर्भाग्य और शर्म की बात है हरियाणा के मूरथल में महिलाओं के साथ दुष्कर्म। जिस देश में नारी की शक्ति के रूप में पूजा होती है वहाँ सामूहिक दुष्कर्म का ऐसा घिनौना काण्ड। एक ट्रक ड्राइवर के कथनानुसार दंगाइयों ने हथियारों के बल पर महिलाओं पर अत्याचार किये। महिलायें चीख चीखकर भाग रही थीं। बड़ी संख्या में उपद्रवी उन्हें खींचकर खेतों में ले जा रहे थे। उनकी करुणामयी और दर्दभरी वाणी सुनने वाला और सहायता करने वाला कोई नहीं था। महिलाओं के साथ पुरुष साथी भी थे लेकिन बहुसंख्यक उपद्रवियों के सामने वे असमर्थ थे।

इन विषम परिस्थितियों में हम यह तो सोचें कि हमारे अमर शहीदों के स्वाधीन भारत के विषय में क्या स्वप्न रहे होंगे, और हम क्या कर रहे हैं? देश की युवा पीढ़ी देश की भावी कर्णधार है। विश्वविद्यालयों में राजनीति का खेल खेलने और अनापेक्षित नारे लगाने के स्थान पर वे देश को सही दिशा में ले जाने का कार्य करें। देश को तोड़फोड़ और नारी उत्पीड़न की शर्मनाक घटनाओं से मुक्त करें। शासक वर्ग के साथ ही जन सहयोग आवश्यक है। इनमें युवा वर्ग की

भूमिका प्रमुख है। यह वही देश है जहाँ मनु ने गौरव पूर्ण घोषणा की थी-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः। - मनु २/२०

इस देश की विभूतियों ने भूमण्डल के मानवों को सर्वत्र अपने उज्ज्वल चरित्र की शिक्षा दी। आज हम भी अपने देश के चारित्रिक उत्थान के लिए प्रयासरत रहें। यदि हमारे शहीदों और देशभक्तों ने अपने दृढ़ संकल्प और आत्म बल से उन शक्तिसम्पन्न अंग्रेज शासकों से देश को मुक्त करा दिया तो निजी स्वार्थ के कारण देश का अहित करने वालों को सही मार्ग पर लाना भी असंभव नहीं है। देश-हित में कार्यरत शक्तियों एवं भाषा से संगठित होकर राष्ट्रहित में कार्य करें तथा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों पर अंकुश लगायें। हमें अपने राष्ट्र तथा मानवता के हित में सोचने की शक्ति बढ़ानी है। यह भारती है। भारत माता की वाणी है। भारत की अन्तश्चेतना की पुकार है।

(We are thank full to KNOW ANDAMAN for pictures-ed.)

पूर्व विभागाध्यक्ष-संस्कृत
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

आपकी लोकप्रिय पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' को संबल प्रदान करने हेतु डी. ए. वी. एच. जेड. ऐल. सि. सै. स्कूल, दरिबा (राजसमन्द) ने संरक्षक सदस्य (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

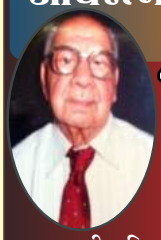

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- १२ शुद्ध हल प्रेषित करने वालों में से एक चयनित विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

नवीन नियम

- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

वैदिक परिवार शिविर

अशोक आर्य

डॉ. अमृतलाल तापड़िया

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक २० से २२ मई २०१६ तक वैदिक परिवार शिविर का आयोजन आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन सत्र में संभागियों का स्वागत करते हुए न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य ने कहा कि आज आर्यजगत् के समक्ष सुरसा जैसा मुँह फाड़ खडीं अनेक समस्याओं में से प्रमुख यह है कि वैदिक धर्म पारिवारिक धर्म नहीं बन पाया। अनेक लोगों से मिलने पर ज्ञात होता है कि उनके दादा या नाना निष्ठावान आर्य समाजी थे पर वे आर्य समाज में सक्रिय नहीं हैं। ऐसा इसलिए कि आर्यसमाज के कार्यक्रमों में वे लोग सपरिवार नहीं जाते थे अतः बच्चों पर संस्कार नहीं पड़े। आज यह समस्या और भी गहरा गयी है। आर्यसमाज को अर्धांग रोग लग गया है अर्थात् पुरुष वर्ग सपत्नीक आर्य समाज के कार्यक्रमों में सम्मिलित नहीं होते। ध्यातव्य है कि बच्चों में अगर कोई वैदिक संस्कार प्रविष्ट करा सकता है तो वह माँ है न कि पिता। अतः परिवार शिविरों की शृंखला आज प्रासंगिक ही नहीं अत्यन्त आवश्यक है।

भवानीदास आर्य

नारायण मित्तल

भँवरलाल गर्ग

भूपेन्द्र शर्मा

श्रीमती ललिता यदुवंशी

सुरेश पाटोदी

नवनीत आर्य

देवीलाल

लक्ष्मण

मोहन

कालू लाल

शिविर निदेशक **डॉ. सोमदेव जी** ने अतीत की स्मृतियों के पिटारे को खोलते हुए कहा कि सत्तर के दशक में मथुरा के महात्मा प्रेमभिक्षु जी के नेतृत्व में उन्होंने वैदिक परिवार शिविरों की सुदीर्घ शृंखला स्थापित की थी जिसका सुपरिणाम आज भी इस रूप में दिखता है कि वे परिवार दृढ़ता से आर्यसमाज के अंग संग खड़े हुए हैं।

शिविर की उपयोगिता में नए आयामों का संवर्धन उड़ीसा से पधारे **स्वामी सुधानन्द** जी व सूरत से पधारे योग तथा आयुर्वेद विशेषज्ञ **आचार्य उमाशंकर जी** की उपस्थिति से हो पाया। स्वामी जी वास्तव में सरल सुबोध व विश्लेषणात्मक तरीके से पारिवारिक मूल्यों के संवर्धन व समस्याओं के समाधान में निष्णात् हैं। उमाशंकर जी ने योगासन व प्राणायाम सिखाने के साथ ही व्याधियों के मूल कारणों की चर्चा करते हुए अनेक रोगों के निवारण के सन्दर्भ में मार्गदर्शन किया।

इस शिविर के संयोजक व न्यास के कोषाध्यक्ष **श्री नारायण मित्तल** के अनुसार उन्हें आश्चर्य तथा हर्ष इस बात का है कि प्रातः ४ बजे से लेकर रात्रि ६.४५ तक अत्यन्त कसी हुयी दिनचर्या में भी कोई सत्र एक मिनट भी देरी से प्रारम्भ नहीं हुआ और सभी में संभागियों की उपस्थिति १०० प्रतिशत! यहाँ तक कि महिलाएँ तथा बालक- बालिकाएँ भी ठीक समय पर आ जाते थे।

न्यास के व्यवस्थापक **श्री सुरेश पाटोदी,** कार्यालय-मंत्री **श्री भंवर लाल गर्ग** तथा सहयोगी **श्री देवी लाल, लक्ष्मण, मोहन** तथा **कालू** द्वारा किये गए पुरुषार्थ के फलस्वरूप पूज्य विद्वानों तथा शिविरार्थियों के आवास तथा भोजन की समुचित व्यवस्था, भीषण गर्मी में भी संभव हो पायीं। अत्युत्तम व्यवस्थाओं को सभी शिविरार्थियों ने सराहा।

महिलाओं के लिए योगासन की कक्षा पृथक् स्थल पर लगायी गयी। प्रशिक्षण का कार्य अतीव दक्षता के साथ **श्रीमती ललिता जी यदुवंशी** ने किया। शिविरान्तर्गत सभी कार्यक्रमों के, अपनी काव्य तथा साहित्य के लालित्य से अनुप्राणित ओजस्वी, माधुर्य से भरपूर वाणी में, सुन्दर संचालन द्वारा **श्री भूपेन्द्र शर्मा** ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

अत्यन्त परिश्रम व पुरुषार्थ से न्यास के पुरोहित व सत्यार्थ सौरभ के ग्राफिक्स डिजायनर **श्री नवनीत आर्य** द्वारा तैयार करवाए गए सभी शिविरार्थियों के उनके अपने फोटो सहित अत्यन्त सुन्दर प्रमाणपत्रों को सभी ने सराहा तथा अनेक शिविरार्थियों ने अपना मानस व्यक्त किया कि वे इस प्रमाण-पत्र को फ्रेम कराके रखेंगे।

शिविर की सफलता से न्यास के मंत्री **श्री भवानी दास आर्य** तथा संयुक्त मंत्री **डॉ. अमृतलाल तापड़िया** इतने उत्साहित थे कि वे अपने भाव प्रकट किये बिना न रह सके कि ऐसे कार्यक्रम ही रचनात्मक हैं, ऐसे कार्यक्रम करना ही सार्थक है, बाकी तो भीड़-भड़क्का मेला ही है। उनकी इच्छा है कि ऐसे शिविर हर दो-तीन महीने बाद आयोजित किये जायं पर वे न्यास की अर्थ व्यवस्था से भलीभाँति परिचित हैं अतः ठंडी सांस लेकर यही बोले कि काश आर्यजगत् के भामाशाह व आम आर्यजन सहयोग करें तो न्यास इस विषय में पहल कर सकता है।

शिविर के वास्तविक नक्षत्र

डा. सोमदेव शास्त्री- शिविर निदेशक के रूप में प्रातः ४ बजे से रात्रि ९.४५ तक अनवरत रूप से शिविर की प्रत्येक गतिविधि पर सफल नियंत्रण, संध्या व यज्ञ का व्यावहारिक प्रशिक्षण, पूर्व निर्धारित विषयों पर सारगर्भित चर्चा, ऋषि-प्रणीत महनीय ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रशिक्षण।

स्वामी सुधानन्द जी- ध्यान का व्यावहारिक प्रशिक्षण, ध्यान-समय में मन को कैसे स्थिर किया जाय, पारिवारिक समस्याएँ तथा उनका समाधान और सबसे महत्त्वपूर्ण- शंकाओं का समाधान जिसका शिविरार्थियों ने भरपूर लाभ उठाया।

आचार्य उमाशंकर जी- आसन, प्राणायाम का व्यावहारिक प्रशिक्षण, भक्ष्याभक्ष्य व विरुद्ध भोजन का दिग्दर्शन , व्याधियों के मूल कारण, प्रशस्त दिनचर्या तथा शिविरार्थियों की स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान।

"संध्योपासन एंटीवायरस का कार्य करती है, यह हमारे दुर्गुण-दुर्भावनाओं को निकालकर उनके स्थान पर सद्गुणों, सद्विचारों का समावेश करती है। - स्वामी सुधानन्द"

श्री केशव देव शर्मा- मधुर भजनोपदेश तथा सामूहिक भजन प्रशिक्षण।

डॉ. प्रो. उमाशंकर जी शर्मा, कुलपति महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय, उदयपुर- समापन समारोह के मुख्य अतिथि द्वारा प्रेरक उद्बोधन कि भौतिक चकाचौंध के इस युग में नयी पीढ़ी के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहने चाहिए। धर्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। व्यक्ति के आन्तरिक चक्षु खुलें, यही धर्म का उद्देश्य है। अग्निहोत्र का महत्त्व- किसान भाई अगर अपने खेतों में अग्निहोत्र करें तो फसल में गुणात्मक तथा संख्यात्मक अभिवृद्धि हो सकती है।'

प्रस्तुति- 'सत्यार्थ दूत' सरोज आर्या, न्यास प्रवक्ता

बीकानेर में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

उन्नीसवीं सदी में जब वेदों को गडरियों के गीत समझा जाने लगा था, देश छुआछुत, जात पांत की रुढ़िवादिता में जकड़ा हुआ था, केवल मूर्तिपूजा को ही धर्म समझा जाने लगा था, देश दिशाहीन होकर दिग्भ्रमित हो चुका था, ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ और आर्य समाज रूपी संस्था का पौधा लगाकर पुनर्जागरण का शंखनाद किया था। ये शब्द गंगाशहर रोड स्थित आर्य समाज के शाखा भवन में आर्य समाज स्थापना दिवस व नवसंवत्सर पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (आठ अप्रैल) को आयोजित भव्य समारोह में डॉ. एच.पी. व्यास, पूर्व वाइस चांसलर एवं सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ने अपने उद्बोधन में कहे। उन्होंने यह भी कहा कि महर्षि ने वेदों का सही अर्थों में भाष्य कर उन्हें पुनर्स्थापित किया।

आचार्य श्री शिवकुमार जी शास्त्री ने नव संवत्सर का उल्लेख करते हुए सृष्टि की रचना का काल १,९६,०८,५३,११७ वर्ष की पुष्टि की। मंत्री महेश सोनी ने बताया कि मुख्य भवन महर्षि दयानन्द मार्ग का पुनर्निर्माण हो रहा है जिसमें विशाल हॉल, भव्य यज्ञशाला व कमरों का निर्माण कराया जा रहा है। इसमें दिया गया दान ८०जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

- महेश सोनी, मंत्री

हम प्रतिज्ञा करते हैं कि आज से जीवन भर नित्यप्रति संध्या करेंगे।

राधेश्याम सुथार, बरखेड़ा पंथ

रविन्द्र राठौड़, उदयपुर

निशा कण्डारा, उदयपुर

सृष्टि राठौड़, उदयपुर

राजेन्द्र आर्य, नेनौरा

चन्द्रपाल सिंह शक्तावत, नेनौरा

भेरुलाल शर्मा, निम्बाहेड़ा

श्रीमती सुनीता शर्मा, उदयुपर

सत्यप्रकाश शर्मा, सेमली

वेदप्रकाश शर्मा, सेमली

श्रीमती राधा शर्मा, निम्बाहेड़ा

श्रीमती शान्ति शर्मा, सेमली

रामचन्द्र पाटीदार, नेनौरा

ओमप्रकाश पाटीदार, नेनौरा

श्रीमती राधा शर्मा, सेमली

संध्या से मैं ने महानन्द पाया

एक अनुत्तरित प्रश्न

यद्यपि इस प्रश्न पर रहस्यमयी हँसी फैल गयी, परन्तु युवा संभागी द्वारा पूछा गया यह प्रश्न अत्यन्त गंभीर तथा हम आर्य कहलाने का दम भरने वालों को आइना दिखाने वाला था। प्रश्न था कि यह मानने का तो कोई कारण नहीं है कि आर्यसमाज के अधिकारी तथा विद्वान् संध्या न करते होंगे। जब यह बताया जा रहा है की संध्या से द्वेष की भावना समूल नष्ट हो जाती है तब संगठन तथा विद्वानों के मध्य द्वेषजन्य अजर–अमर फूट तथा गुटबाजी क्यों ?

इस लाजबाब प्रश्न का समाधान किसी के पास हो तो हमें भेजे, हम उस युवक को भेज देंगे।

एक नवीन प्रकल्प

श्रीमती ब्रजलता आर्या मल्टीमीडिया सेन्टर के अन्तर्गत, यहाँ आने वाले ३०,००० दर्शकों, शैक्षणिक भ्रमण पर आये छात्र–छात्राओं, उदयपुर तथा आसपास के क्षेत्र के २०० विद्यालयों के विद्यार्थियों को विशेष भक्तिभाव से भरे डिजिटल भजनों, महर्षि दयानन्द तथा अन्य महापुरुषों के प्रेरक जीवन–चरित्र–दिग्दर्शन से उनके अन्दर अध्यात्म तथा राष्ट्र–प्रेम के भावों को संचरित करने की पूर्ण तैयारी कर ली गयी है। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं को डिजिटल रूप में दर्शकों को समझाने के प्रोजेक्ट पर साधनों के अभाव में भी अनथक प्रयत्न कर मूर्त रूप देने में कृत संकल्प हैं। दो दिनों में पौन–पौन घंटे के दो शो शिविरार्थियों को गहराई से प्रभावित कर गए विशेष रूप से सप्तम समुल्लासान्तर्गत कर्म–फल–विषय पर बनाया शो तथा उसकी व्याख्या।

दैनिक भास्कर, उदयपुर सोमवार, 23 मई 2016

मैं नवलखा महल...स्वामी जी और सत्यार्थ प्रकाश ने मुझे अमर कर दिया

प्राइड ऑफ उदयपुर | स्वामी दयानंद ने 10 अगस्त 1882 से 27 फरवरी 1883 तक यहां किया था प्रवास, महाराणा सज्जन सिंह के बुलावे पर आए थे

विवेक दुबे | उदयपुर

मैं 19वीं सदी में बना नवलखा महल हूं। मैं कभी मेवाड़ के तत्कालीन शासक महाराणा सज्जन सिंह का मुख्य राजकीय अतिथि गृह हुआ करता था। नाना सुख-सुविधाओं और ऐश्वर्यशाली भोग विलासिता से संसाधनों से भरापूरा। लेकिन क्या देखता हूं कि एक रोज यहां रहने एक साधु आए। बड़े ही विचित्र और सम्मोहक। इन साधु ने एक क्रांतिकारी ग्रंथ भी लिखा। ऐसे साधु और ऐसा ग्रंथ कि मेरी भी आत्मा को तृप्त कर गए। ये साधु थे महर्षि दयानंद सरस्वती और ग्रंथ था सत्यार्थ प्रकाश। वे यहां महाराणा सज्जन सिंह के बुलावे पर आए थे। स्वामी दयानंद ने 10 अगस्त 1882 से 27 फरवरी 1883 तक यहां प्रवास किया। मेरे लिए सबसे गौरवमयी बात यह है कि यहीं पर महर्षि ने युग प्रवर्तक ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश लिखा। उन दिनों मेवाड़ में भैंसों की बलि आम थी। एक दिन यह साधु महाराणा सज्जन सिंह के दरबार में पहुंचे और गरजे : मैं इन निर्दोष जानवरों का वकील बनकर आया हूं और आप इनकी बलि पर रोक लगाइए। कुछ तर्क-वितर्क और शास्त्रों के प्रमाण के बाद शासन ने पशु बलि पर रोक लगा दी।

गोविंद गुरु ने आदिवासियों के बीच फैलाया ज्ञान

मेवाड़ प्रवास के दौरान महर्षि दयानंद को सुनने भीलांचल के गोविंद गुरु भी आया करते थे। दयानंद से प्राप्त ज्ञान को उन्होंने अनपढ़ आदिवासियों के बीच प्रसारित किया। गोविंद गुरु आदिवासी अंचल में सुधारवादी कार्य करते रहे।

यदि राजा सुधर जाए तो वह सारी प्रजा को सुधार देगा

महर्षि मानते थे कि यदि राजा सुधर जाए तो वह अपनी सारी प्रजा को सुधार सकता है। तब महाराणा सज्जन सिंह उनके अनुयायी हो गए थे। इसका प्रमाण है कि जितने दिन दयानंद ने यहां प्रवास किया, महाराणा रोजाना आम श्रावकों की तरह महर्षि से सत्य का प्रकाश प्राप्त करने आया करते थे। महर्षि ने महाराणा को वैदिक धर्म और संस्कृति की दीक्षा दी। वेद, दर्शन और मनुस्मृति आदि के वे पाठ पढ़ाए, जिनसे जनकल्याणकारी शासन हो सके। राजकाज में हिंदी का प्रयोग करने का आदेश भी स्वामी जी ने ही निकलवाया।

कभी आबकारी विभाग का कार्यालय भी बना दिया

जब राजे-रजवाड़ों की संपत्तियां सरकारी कब्जे में चली गईं। मैं (नवलखा महल) भी सरकार के अधीन हो गया। मुझे आबकारी विभाग और सेल्स टैक्स के कार्यालय में तब्दील कर दिया गया। सत्यार्थ प्रकाश की रचना के 100 वर्ष पूरे होने पर 1982 में यहां सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन हुआ। आर्य समाजियों ने इसे श्रीमद् दयानंद सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर को देने मांग की। पुरजोर तरीके से दबाव और मांग के बाद सन् 1992 में तत्कालीन मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत ने मुझे पुनः सत्यार्थ प्रकाश न्यास को सौंप दिया।

क्या है सत्यार्थ प्रकाश

दयानंद के सत्यार्थ प्रकाश में 14 अध्याय हैं। इसमें उन्होंने बाल-शिक्षा, अध्ययन-अध्यापन, विवाह और गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास-राजधर्म, ईश्वर, सृष्टि-उत्पति, बंध-मोक्ष, आचार-अनाचार, आर्यावर्तदेशीय मतमतान्तर, ईसाई मत और इस्लाम के बारे में अपने विचार लिखे हैं। सत्यार्थ प्रकाश मूल रूप से हिंदी में लिखा गया था, लेकिन यह अब तक संस्कृत समेत दुनियाभर की 20 से अधिक भाषाओं में अनूदित हो चुका है। दिलचस्प है कि संस्कृत में 1924 में लिखे जाने से पहले चार अलग-अलग लेखक इसे अंग्रेजी में लिखे चुके थे। मातृभाषा गुजराती और संस्कृत का अथाह ज्ञान होने के बावजूद महर्षि ने इसे हिंदी में लिखा। संस्कृत छोड़कर हिंदी अपनाने की सलाह उन्हें कलकत्ता प्रवास के दौरान केशवचंद्र सेन ने दी थी।

समाचार

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके है। प्रवेश उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही विद्यार्थी को कक्षा ६ एवं ८ में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम ४ अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर कक्षा ७ में प्रवेश पा सकता है। विद्यार्थी का मेधावी होना आवश्यक है। गुरुकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है, इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययन आदि की व्यवस्था भी अति उत्तम है।

- आचार्य स्वदेश, कुलाधिपति, चलभाषः ९४५६८११५१६

आर्य समाज, अलवर व गुलाबी टीम ने शराबबंदी को लेकर रैली निकाली

तेज गर्मी के बावजूद शराब ठेकों के खिलाफ किए जा रहे आन्दोलन को लेकर महिलाओं के हौसले बुलंद हैं। शराब बन्दी की माँग को लेकर आर्य समाज की ओर से सोमवार को रैली निकाल राज्यपाल व मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर, मुक्तानंद अग्रवाल को ज्ञापन दिया। गुलाबी टीम की ओर से जनजागृति रैली निकाली गई। शहर में तीनों जगह रोड नम्बर दो पर दो जगह व विकास पथ पर आंदोलनकारियों का धरना जारी रहा। स्वामी दयानन्द मार्ग, आर्य समाज के प्रधान प्रदीप आर्य ने बताया कि शराबबन्दी की माँग को लेकर सुबह गंगली सर्किल स्थित, आर्य कन्या स्कूल से कलेक्ट्रेट तक जुलूस निकाला गया। इसके बाद मुख्यमंत्री व राज्यपाल के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया। २३ अप्रेल को आर्य समाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान १० हजार लोगों ने हस्ताक्षर किए थे। ज्ञापन देने वाले प्रतिनिधि मंडल में प्रदीप आर्य, कमला शर्मा, स्वामी चेतनानन्द, धर्मवीर आर्य, हरपाल शास्त्री व सौरभ आर्य शामिल थे।

दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिकोत्सव रंगारंग प्रस्तुतियों, बालिका शिक्षा पर आधारित प्रेरक नाटक एवं पारितोषिक वितरण के साथ सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्रीमती कमला अग्रवाल संरक्षक, नारायण सेवा संस्थान ने बालिका शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि श्रीमती डॉ. काकिला जी गोयल ने बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए हर विद्यालय में वैदिक शिक्षा हेतु शिक्षक व्यवस्था का आह्वान किया। सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। वार्षिक प्रतिवेदन विद्यालय मंत्री श्री कृष्ण कुमार सोनी ने पढ़ा। आभार विद्यालय मानद निदेशक पुष्पा जी सिंधी ने व्यक्त किया। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

आर्य समाज हिरण मगरी के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी के वार्षिक चुनाव श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। प्रधान श्री भंवरलाल आर्य, मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा, कोषाध्यक्ष श्री अम्बालाल सनाढ्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

महामहिम राज्यपाल आचार्य डॉ. देवव्रत जी का हार्दिक अभिनन्दन

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल जोधपुर प्रवास पर महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास का अवलोकन करने पधारे। आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनिनगर द्वारा महामहिम राज्यपाल का स्मृति चिन्ह द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया। जिसमें आर्य समाज के पदाधिकारी गजेन्द्रसिंह, मदन जी तंवर, कैलाश चन्द्र, धीरेन्द्र भाटी, शिवराम आर्य, कानजी भाटी, महेश आर्य, चेतन प्रकाश, रमेश मेहरा, नरेन्द्र आर्य व श्रीमती संतोष आर्या इत्यादि उपस्थित थे।

वेद विदुषी आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा आर्य रत्न सम्मान से सम्मानित एवं अनूचान साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत

श्री राव हरिचन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा Constitution Club Of India मावलंकर ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में ९ अप्रैल २०१६ शनिवार को आयोजित सम्मान व पुरस्कार समारोह में आर्यजगत् की प्रसिद्ध वेद विदुषी आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी को आर्यरत्न सम्मान से सम्मानित एवं अनूचान साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। सम्मान व पुरस्कार मान्य वी.के सिंह, रिटायर्ड जनरल केन्द्रिय विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार, मान्य डॉ. हर्षवर्धन, केन्द्रिय विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्री भारत सरकार के अप्रत्यक्ष आर्शीवाद एवं मान्य श्री सत्यपाल सिंह जी लोकसभा सदस्य, भारत सरकार के सान्निध्य में श्री सुमेधानन्द जी लोकसभा सदस्य भारत सरकार द्वारा १०१०००/- रु. का चेक, स्मृति चिह्न सम्मान पत्र दिया गया तथा राव परिवार की बहनों द्वारा शॉल, श्रीफल व पुष्पमाला द्वारा सम्मान किया गया।

अवैदिक है बालविवाह

शान्तिनगर स्थित आर्य समाज मन्दिर निम्बाहेड़ा में साप्ताहिक सत्संग का आयोजन यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के संचालक उमराव सिंह भाटी ने वैदिक प्रमाणों के साथ बाल विवाह को अवैदिक करार देते हुए बताया कि वैदिक धर्म में पंच महायज्ञ, सोलह संस्कार व चतुर्वर्णीय वर्ण व्यवस्थानुसार चारों वर्ण के बालक बालिका को आठ वर्ष के होने पर उनका यज्ञोपवीत संस्कार कराकर गुरुकुल में वेदारम्भ संस्कार हेतु भेजा जाता था जहाँ पर पच्चीस वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन कर विद्या अध्ययन व शारीरिक रूप से बलिष्ठ होने के उपरान्त ही गृहस्थ आश्रम में प्रवेश के योग्य होते थे।

हलचल

आर्य समाज रामनगर का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज रामनगर, रुड़की का वार्षिक चुनाव श्री जे.डी. त्यागी चुनाव अधिकारी की देखरेख में सम्पन्न हुआ और निम्न सभी पदाधिकारी निर्विरोध चुने गये।

रामेश्वर प्रसाद सैनी (प्रधान), अरविन्द मिनोचा (मंत्री), जे.डी. त्यागी (कोषाध्यक्ष)।

- विनोद कुमार सैनी, प्रचारमंत्री

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर पर्व मनाया गया

आर्य समाज हिरण मगरी की ओर से आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर पर्व पर विशेष यज्ञ प्रवचन हुए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री

अशोक आर्य ने प्रारम्भ में नववर्ष की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हजारों वर्ष की गुलामी के कारण हमने आज के दिन के महत्व को भुला दिया। आज ही के दिन समाज में फैले अंधविश्वास, कुरीतियों को दूर करने के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थाना की थी। अनिवार्य शिक्षा महर्षि ने आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व सत्यार्थ प्रकाश में अनिवार्य घोषित कर दी थी। भवानीदास आर्य एवं श्रीमती राधा त्रिवेदी ने इस अवसर पर प्रेरक भजन प्रस्तुत किये।

वेद असीम ज्ञान की पुस्तक है

वेद असीम ज्ञान की पुस्तक है यह पुस्तक सकारात्मक सोच और ऊर्जा देती है। विश्व को सुख शांति वेद दे सकता है। उक्त विचार के.के. कौल पूर्णकालिक निदेशक डी.सी.एम. श्रीराम लि. कोटा ने आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा प्रेस क्लब कोटा को उनके पुस्तकालय के लिये वेदों का सेट भेंट करने के अवसर पर व्यक्त किए। आर्यसमाज जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा ने कहा कि वेद मानव मात्र के कल्याण के लिये है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों का भाष्य करके सबके लिये वेद का ज्ञान सुलभ कर दिया।

महर्षि दयानन्द के सच्चे सिपाही 'किशन जी गहलोत (बाबूजी)'

महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के प्रति अटूट श्रद्धा व भक्ति मन में हो तो व्यक्ति क्या नहीं कर सकता। ऐसे ही समाज सेवक कर्मठ व निर्भीक

व्यक्तित्व के धनी श्री किशन जी "बाबूजी" ने ३०अप्रेल २०१६ को सरकारी सेवा से सेवानिवृत्ति के दिन पधारे हुए स्नेहीजनों व अतिथियों को १११ (एक सौ ग्यारह) सत्यार्थ प्रकाश वितरित कर ऋषि के मिशन को गति प्रदान की। आप आर्य समाज महर्षि पाणिनिनगर, जोधपुर के सक्रिय सदस्य व कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

भारतीय नववर्ष सोल्लास मनाया

आर्य समाज सोजत की ओर से हरिजन बस्ती में स्थानीय हनुमान जी के मंदिर प्रांगण में यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पद से हीरालाल आर्य, प्रधान दलवीर राय ने सभी को आशीर्वाद देते हुए संगठित रहकर कार्य करने का आह्वान किया। वहीं डा. श्रीलाल ने नववर्ष की उपयोगिता व इस अवसर पर सभी को यज्ञ करने की प्रेरणा दी। - हीरालाल आर्य, मंत्री

प्रतिस्वर

प्रिय श्री अशोक जी, सादर नमस्ते जी

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि सत्यार्थ सौरभ प्रतिदिन नई ऊँचाईयों की ओर बढ़ रहा है। भारत वर्ष की क्या स्थिति, इनकी रक्षा सम्बन्धी, स्वास्थ्य, जल, जंगल, पहाड़ों को बचाना आदि प्रत्येक अंक में विशेष ज्ञान की बातें आती है।

भारतीय संस्कृति की रक्षा पर अच्छी-अच्छी बातें मिलती है। इसके लिये आप को बहुत धन्यवाद। - किशनाराम आर्य बीलू

माननीय श्री नवनीत आर्य जी, ससम्मान नमस्कार!

निवेदन है कि हमने दो दिन के प्रवास में अनुभव किया कि आपकी संस्था श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल गुलाब बाग, उदयपुर द्वारा स्वामी दयानन्द जी द्वारा संस्थापित आर्यसमाज के आध्यात्मिक क्रिया कलापों का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, वह बहुत सराहनीय है। वास्तव में आप Vedic Think Bank का कार्य कर रहे हैं। यानि वैचरिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक प्रकाशन द्वारा प्रचार-प्रसार कार्य के लिये आपको व श्री अशोक आर्य जी को साधुवाद, धन्यावाद। वास्तव में प्रत्येक आर्य समाजी का यह कर्तव्य होना चाहिये कि जीवन में एक बार अवश्य आपके यहाँ आकर नवलखा महल का अवलोकन करें, क्योंकि 'आर्यावर्त्त चित्र दीर्घा' व सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ अवलोकनीय हैं। यह महान समाज सुधारक स्वामी दयानन्द के आध्यात्मिक चिन्तन का बिम्ब है।

अतः मैं आपका एवं श्री अशोक आर्य जी का आभारी हूँ। जो आपने आवास-प्रेम दिया क्योंकि आपके दो दिन के सहयोग बिना हमारी यह सुखद यात्रा संभव नहीं थी। - सुशील धवन, इलाहाबाद

सुश्री सरला अनन्त का आकस्मिक निधन

सुश्री सरला अनन्त पुत्री श्री मनुराम जी का आकस्मिक निधन दिनांक १६ अप्रैल २०१६ को हो गया। वे आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर की सक्रिय सदस्या थीं और न्यास के प्रति भी उनका सदैव सद्भाव व सहयोग रहता था। उनके निधन पर न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक संवेदना। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें और परिवारीजनों को इस वियोगजन्य पीड़ा को सहने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें। - भवानीदास आर्य, मंत्री (न्यास)

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ४/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ४/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री नन्दकिशोर प्रसाद, सरायकेला (झारखण्ड), श्री तुलसीराम आर्य, बीकानेर (राज.), श्री संजय आर्य, नाहरी (हरि.), श्री रमेशचन्द्र प्रियदर्शन, सीतामढ़ी (बिहार), किरण आर्या, कोटा (राज.), श्रीमती उषा आर्या, उदयपुर (राज.), श्री मुकेश पाठक, उदयपुर (राज.), मीना वासुदेवभाई ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेवभाई ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात), श्री इन्द्रजीत देव, यमुनानगर (हरि.), श्री यज्ञसेन चौहान, अजमेर (राज.), श्री वासुदेवभाई मगनलाल ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात)। उपर्युक्त सभी सत्यार्थ सौरभ के सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

दो गरीब भाई

कथा सरित

देवदत्त नाम का एक व्यक्ति है। गरीब लोगों के प्रति उसके मन में बहुत घृणा का भाव बैठा हुआ है। यह उनको सदा हीन दृष्टि से देखता है और चोर-चालाक-बेईमान-ठग आदि विशेषणों से विशेषित करता रहता है। उनके प्रति इसके मन में दया-करुणा व प्रेम के स्थान में क्रूरता का भाव भरा हुआ है।

दो गरीब भाइयों ने अपने महत् कर्म के द्वारा देवदत्त की गरीबों के प्रति बनी अवधारणा को सदा-सदा के लिए साफ कर दिया। सो कैसे? सुनिए; एक दिन देवदत्त अपने घर से माचिस लेने के लिए निकला। टहलता हुआ आगे बढ़ा, तो उसने देखा कि सड़क के किनारे पर दो बच्चे रेहड़ी लगाकर अपना छोटा-मोटा सामान बेच रहे हैं। देवदत्त ने बच्चों से माचिस की मांग की। बच्चों ने माचिस उसके हाथ में देते हुए उसका मूल्य पचास पैसे बता दिया। देवदत्त के पास टूटे पैसे नहीं थे। सौ रुपये का नोट था। सो उनमें से एक बच्चे को नोट देकर किसी दुकान पर तुड़वा लाने के लिए भेज दिया। बच्चा जिस दुकान पर गया, वह थोड़ी दूर थी। वह पैसे लेकर वापस आ ही रहा था कि एक कार ने उसको तेज टक्कर मार दी। बालक वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा। खैर, कार वाले ने तत्काल उसे अपनी गाड़ी से हॉस्पिटल पहुँचा दिया और उपचार हो गया।

इतने में इधर रेहड़ी पर बैठे हुए, उसके छोटे भाई को भी सूचना मिल गई कि उसके भाई के साथ दुर्घटना (Accident) हो गयी है, और वह हॉस्पिटल में है। इसलिए वह भी जल्दी से हॉस्पिटल पहुँच गया। तब तक ग्राहक देवदत्त उनकी रेहड़ी के पास ही खड़ा रहा। दुर्घटनाग्रस्त बच्चे को जैसे थोड़ा होश आया, उसने इधर-उधर देखा। उसको पता चला कि तू तो हॉस्पिटल में है। अब तुरन्त उसके मन में चिन्ता हुई कि वह व्यक्ति जिसने मुझे पैसे तुड़वा लाने के लिए भेजा था, अब तक प्रतीक्षा कर रहा होगा। अपने भाई को उसने बचे हुए पैसे देते हुए कहा कि शीघ्र जाओ और अकस्मात् मैं मर गया तो मेरे मर जाने से पहले उनसे उनके कष्ट के लिए क्षमा माँगते हुए उनकी यह राशि लौटाओ, अन्यथा वह कहेगा कि ये यब ठग होते हैं।

दुर्घटना-ग्रस्त भाई के द्वारा दी गई ग्राहक की अवशिष्ट राशि लौटाने के लिए वह बालक ज्यों ही उसके पास पहुँचता है और अपने भाई का सारा वृत्तान्त सुनाता है तो देवदत्त का हृदय भर आता है। उसकी गरीबों व निर्धनों के प्रति सारी अवधारणायें एक ही साथ ढह जाती हैं। वह कह उठता है- मैंने निम्न वर्ग कहकर आज तक उसके प्रति जो परिकल्पनायें बनायी थीं वे छोटे-छोटे इन दो बच्चों ने एकदम मिथ्या सिद्ध कर दीं। मिथ्या ही नहीं, यदि उनके स्थान पर उच्च वर्ग के बच्चे होते तो मैं ऐसा सोचता हूँ- कभी भी इस उत्कृष्ट ईमानदारी का परिचय नहीं दे पाते। अब तो वही देवदत्त निर्धनों के सैकड़ों-सैकड़ों गुणगान करने लगता है।

वस्तुतः धन-ऐश्वर्य को उच्चता व निम्नता का पैमाना बनाकर उच्च वर्ग और निम्न वर्ग जो यह विभाजन किया जाता है, वह ठीक नहीं है। निर्धन लोग साधन-सम्पन्न लोगों से अधिक परिश्रमी, अधिक ईमानदार, सत्यप्रेमी, कर्त्तव्यनिष्ठ, चरित्रवान्, संयमी आदि प्रायः होते ही हैं। अपवाद तो सब जगह रहते हैं। उनके हृदय में प्रेम, करुणा, दया, धनवानों की तुलना में कहीं ज्यादा होती है। यद्यपि भोगों की भूख तो ज्ञानी पुरुषों को छोड़कर मनुष्य मात्र या जीव मात्र की होती ही है। फिर भी यदि कोई तुलना ही करने तो लग जाए तो निष्कर्ष यही निकलेगा कि निर्धन कम भूखे हैं। जो जितना अधिक धनवान् है, वह उतना ही अधिक भूखा है। निर्धन व्यक्ति कम साधनों से बहुत

"जैसे आँख के रोगी को सूर्य का प्रकाश कष्टदायी होता है, उसी प्रकार माया की चमक से धन-मुग्ध व्यक्तियों की आँखें ही शीघ्र प्रभावित होती हैं।"

अधिक मात्रा में सन्तुष्ट मिलेगा। तथाकथित धनवान् जितना शीघ्र पैसे के लोभ में बहक जाता है, अपना जमीर बेच देता है, कितना नीचे उतर सकता है- यह सब अकल्पनीय है।

सोने व चाँदी के टुकड़ों के प्रति धनवानों का जो आकर्षण है और उसके कारण ये लोग जो कुछ कर रहे हैं, करते रहते हैं, कर सकते हैं, यह किसी से छिपा हुआ नहीं है। 'जैसे आँख के रोगी को सूर्य का प्रकाश कष्टदायी होता है, उसी प्रकार माया की चमक से धन-मुग्ध व्यक्तियों की आँखें ही शीघ्र प्रभावित होती हैं।' निर्धन आदि अपना बलिदान देना बन्द कर दें तो इस सृष्टि का भौतिक सौन्दर्य ही समाप्त हो जाए। समस्त उत्पादन का मूल शरीर-श्रम है। श्रमिक लोग बेचारे अपना पसीना बहाते हुए इस धरती को हरा भरा किये रखते हैं। इन तपस्वी श्रमिकों को श्री महाराज धरती का देवता कहा करते हैं। उनके स्वनिर्मित भजन की एक टेक है- 'श्रमिक जन जीवित पीर फकीर'। और भी उनका एक प्रिय वचन है-

'गरीबी सदाचारियों का भूषण है, श्रद्धालुओं का जीवन है और परानुरागियों का स्वरूप है।'

यद्यपि हमारे प्राचीन वैदिक साहित्य में समृद्धि (Prosperity) की बहुत महिमा गायी गयी है; पर वहाँ 'समृद्धि' का यह अर्थ कतई नहीं है कि एक-दूसरे की देखा-देखी साधनों का अम्बार लगा लिया जाए बल्कि अपनी सही समझ के प्रकाश में अपनी भौतिक आवश्यकताओं का निर्धारण किया जाए और उसके लिए ईमानदारीपूर्वक मेहनत पुरुषार्थ करते हुए जो कुछ साधन उपलब्ध हो जाएँ, उनमें व्यक्ति पूर्ण सन्तुष्ट रहे। श्री महाराज की साधन-सुविधाओं के सम्बन्ध में ठीक यही दृष्टि है।

साभार- आचार्य प्रद्युम्न जी

श्री माधुरीसरन अग्रवाल को स्मरांजलि

निस्पृह, कर्मयोगी श्री माधुरीसरन अग्रवाल अनेक सामाजिक,

धार्मिक सांस्कृतिक तथा व्यवसायिक संस्थाओं से जुड़े एवं अनेक परमार्थिक और समाज सेवा के कार्यों में संलग्न रहे। आपने नर्मदा उद्योग समूह की स्थापना कर अपने व्यवसाय को विस्तृत आयाम दिये। आर्य समाज, अग्रवाल समाज, बृजवासी समाज, अग्रवाल महासभा, लायन्स क्लब, फेडरेशन ऑफ चेम्बर ऑफ कामर्स एंड इन्डस्ट्रीज, गाँधी भवन, हिन्दी भवन, मानस भवन, आशा निकेतन, कैंसर अस्पताल, अभिनव कला परिषद् मधुवन तथा अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी रहे श्री माधुरीसरन अग्रवाल ने शिक्षा, चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म, साहित्य कला एवं संस्कृति तथा व्यापार-व्यवसाय वाणिज्य के क्षेत्र में लोकोपकारी उपक्रमों के माध्यम से व्यापक लोकाप्रियता अर्जित की।

ऐसे उदाहरण प्रेरणा पुरुष की पुण्यतिथि पर शनिवार ७ मई २०१६ को सायं ७ बजे श्री रामकिंकर सभागृह, मानस भवन श्यामला हिल्स भोपाल में आयोजित 'स्मरण माधुरी व्याख्यान माला' का प्रथम पुष्प देश के प्रमुख उद्योगपति तथा जी.टी.वी. के संचालक डॉ. सुभाष चन्द्रा ने अर्पित किया।

डॉ. पूर्ण सिंह डबास राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (भारत सरकार) की 'हिंदी सेवी सम्मान योजना' के अंतर्गत गत १६ अप्रैल को डॉ. पूर्ण सिंह डबास को 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें शोध तथा पर्यटन साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। समारोह का आयोजन राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में किया गया जहाँ महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने डॉ. डबास को सम्मानित किया। इस सम्मान के अन्तर्गत प्रशस्ति पत्र, शाल तथा एक लाख रुपये की राशि पुरस्कार स्वरूप भेंट की गयी। इस अवसर पर मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी तथा राज्य मंत्री डॉ. राज किशोर कटेरिया सहित भारत सरकार के अनेक उच्चाधिकारी, विद्वान तथा सैंकड़ों गण्य-मान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

डॉ. पूर्ण सिंह डबास दिल्ली विश्वविद्यालय तथा पीकिंग विश्वविद्यालय (चीन) में प्रोफेसर रहे हैं। उन्होंने भाषाविज्ञान, हास्य-व्यंग्य, पर्यटन, समाजविज्ञान तथा धर्म-दर्शन आदि के क्षेत्र में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। 'महाद्वीपों के आर-पार' नामक उनकी पुस्तक पर्यटन साहित्य में एक मील का पत्थर मानी जाती हैं।

घटाएँ अपना वजन

गतांक से आगे .....

१०. नीले रंग का अधिक प्रयोग करें: नीला रंग भूख को कम करता है। यही वजह है कि अधिकतर भोजनालय इस रंग का प्रयोग कम करते हैं। तो आप खाने में नीली प्लेट्स का प्रयोग करें , नीले कपड़े पहनें, और टेबल पर नीला मेजपोश डालें। इसके उलट लाल, पीले तथा नारंगी रंग से खाते समय दूरी बनाए रखें, ये भूख बढ़ाते हैं।

११. अपने पुराने कपड़ों को दान कर दें : एक बार जब आप सही वजन पा चुके हैं तो अपने पुराने कपड़े, जो अब आपको ढीले होंगे, उन्हें किसी को दान कर दें। ऐसा करने से दो फायदे होंगे। एक तो आपको कुछ दान करके खुशी होगी और दूसरा आपके दिमाग में एक बात रहेगी कि यदि आप फिर से मोटे हुए तो वापस इतने कपड़े खरीदने होंगे। ये बात आपको अपना वजन सही रखने के लिए प्रेरित करेगी।

१३. खाने के लिए छोटी प्लेट का प्रयोग करें: अध्ययनों से पता चला है कि चाहे आपको जितनी भी भूख लगी हो यदि आपके सामने कम खाना होगा तो आप कम खायेंगे,

और यदि ज्यादा खाना रखा है तो आप ज्यादा खायेंगे, तो अच्छा होगा कि आप थोड़ी छोटी थाली इस्तेमाल करें जिसमें कम खाना आये। इसी तरह चाय-कॉफी के लिए भी छोटे कप प्रयोग करें। बार-बार खाना लेना आपका ऊर्जा ग्रहण को बढ़ाता है इसलिए आपको जितना खाना है उसी हिसाब से एक ही बार में उतना खाना ले लें।

१३. जहाँ खाना खाते हों वहाँ सामने एक शीशा लगा लें: एक अध्ययन में ये पाया गया कि शीशे के सामने बैठकर खाने वाले लोग कम खाते हैं। शायद खुद का वजन तथा आकार देखकर उन्हें ये याद आता हो कि वजन कम करना उनके लिए बेहद जरूरी है।

१५. Water rich food खाएं : 'Pennsylvania State University' के एक शोध में पाया गया है कि Water rich food , जैसे कि टमाटर, लौकी, खीरा, आदि खाने से आपकी कुल ऊर्जा खपत कम होती है। इसलिए इनका अधिक से अधिक प्रयोग करें।

१६. Low fat milk का प्रयोग करें : चाय , कॉफी बनाने में, या सिर्फ दूध पीने के लिए भी सपरेटा दूध का प्रयोग करें, जिसमें कैल्सियम ज्यादा होता है और ऊर्जा कम।

१७. ९०% खाना घर पर ही खाएँ : अधिक से अधिक घर पर ही खाना खाएँ और यदि आप बाहर भी घर का बना, खाना ले जा सकते हों तो ले जायें। बाहर के खाने में ज्यादातर वसा और कैलोरी ज्यादा होती हैं, इनसे बचें।

१८. धीरे-धीरे खाएँ : धीरे खाने से आपका ब्रेन पेट भर जाने का सिग्नल पहले ही दे देगा और आप कम खायेंगे।

१९. तभी खायें जब सचमुच भूख लगी हो : कई बार हम बस यूँहीं खाने लगते हैं। कई लोग आदत, ऊब या अधीरता की वजह से भी खाने लगते हैं। अगली बार तभी खाएँ जब आपको वाकई में भूख सहन ना हो। यदि आप कोई विशिष्ट चीज खाने के लिए खोज रहे हैं तो ये भूख नही बस स्वाद बदलने की बात है, जब सच में भूख लगेगी तो आपको जो कुछ भी खाने को मिलेगा आप खाना पसंद करेंगे।

२०. जूस पीने की बजाये फल खाएँ, उससे आपको वही लाभ होंगे, और जूस की अपेक्षा फल आपकी भूख को भी कम करेगा, जिससे कुल मिलाकर आप कम खायेंगे।

२१. ज्यादा से ज्यादा चलें : आप जितना ज्यादा चलेंगे आपकी ऊर्जा उतना ही अधिक खर्च होंगी। लिफ्ट की जगह सीढ़ियों का इस्तेमाल करना, आस-पास पैदल जाना आपके लिए मददगार साबित होगा। घर में भी आप दिन भर में एक-दो बार अपनी छत का चक्कर लगाने की कोशिश करें। छोटे-छोटे प्रयत्न बड़े परिणाम देंगे।

२२. हफ्ते में एक दिन कोई भारी काम करें : हर हफ्ते कोई एक भारी काम या क्रियाकलाप करें। जैसे कि आप

एक दिन अपनी मोटरसाईकल या कार धोने का सोच सकते हैं, बच्चों के साथ कहीं घूमने जाने की योजना बना सकते हैं, या अपने जीवनसाथी की मदद करने के लिए घर की सफाई कर सकते हैं।

२३. ज्यादातर ऊर्जा दोपहर से पहले उपभोग कर लें : अध्ययन से पता चला है कि जितना अधिक आप दिन के वख्त खा लेंगे रात में आप उतना ही कम खायेंगे। और दिन में जो ऊर्जा आपने उपभोग की है उसके रात तक खर्च हो जाने की संभावना अधिक है।

२४. डांस करें : जब कभी आपको वख्त मिले तो बढ़िया संगीत लगा कर dance करें। ऐसा करने से आपका मनोरंजन भी होगा और अच्छी-खासी ऊर्जा भी खर्च हो जाएँगी। यदि आप इसको दिनचर्या में ला पाएँ तो बात ही क्या है।

२५. नींबू और शहद का प्रयोग करें : रोज सुबह हल्के गुनगुने पानी के साथ नींबू और शहद का सेवन करें। ऐसा करने से आपका वजन कम होगा। यह उपाय हमारे पाठक श्रीमान् वी. डी. शर्मा जी ने अपने अनुभव के मुताबिक बताया है। ऐसा करके उन्होंने अपना वजन २० किलो तक कम किया है। उम्मीद है यह आपके लिए भी कारगर होगा।

२६. दोपहर में खाने से पहले ३ ग्लास पानी पीयें : ऐसा करने से आपको भूख कुछ कम लगेगी, और यदि आप अपना वजन कम करना चाहते हैं तो भूख से थोड़ा कम खाना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

याद रखिये कि वजन कम करने के लिए आपको सब्र रखना होगा। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देकर आप इस काम को तेजी से कर पायेंगे। और इस दौरान आप जो कर रहे हैं उस पर यकीन करना बहुत जरूरी है। उम्मीद है आपको जल्दी वजन कम करने में ये टिप्स काम आयेंगे। शुभकामनाओं सहित

साभार- डॉ. एन. शाह

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १८ पर देखें।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

स्वार्थ नहीं, परमार्थ भाव,
ही सबको सुख पहुँचाता है।
सुयश फैलता चहुँ ओर और,
जीवन सफल हो जाता है।।

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

राजा भी प्रजातान्त्रिक व्यवस्था का अंग

निम्न वेद मंत्रों में प्रजा की राजा से क्या अपेक्षाऐं हैं, उसका वर्णन आता है।

भूर्भवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याꣳसुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः।
नर्य प्रजां मे पाहि शꣳस्य पशून् मे पाह्यथर्य पितुं मे पाहि ।।
(यजु. ३/३७)

आ त्वा गन्नाष्ट्रं सह वर्चसोदिहि प्राङ्विशां पतिरेकराट् त्वं वि राज।
सर्वास्त्वा राजन्प्रदिशो ह्वयन्तूपसद्यो नमस्यो भवेह।।
त्वां विशो वृणतां राज्या य त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः।
वर्ष्मन्नाष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि।।
(अथर्व. ३/४/१,२)

प्रजा की ओर कहा जाता है कि- हे! तीनों लोकों के नर श्रेष्ठ राजा! तुम्हारे माध्यम से हम प्रजाजनों का कल्याण हो। तुम युद्ध में हमारे शत्रुओं से हमारी रक्षा करो। सोमादि औषधि, स्वर्णादि धन और नैरोग्य का राज्य में बाहुल्य हो। हमारे पशुधन की आप रक्षा करो। आपका ऐश्वर्य सारे राज्य में व्यापक रहे हमारे पिता आदि परिवारजनों की भी आप रक्षा करो। पुनः पुरोहित उसे (राजा को) आदेश देता है कि हे राजन्! यह राष्ट्र तुमको प्राप्त हुआ है, इसमें तू तेज के साथ उदय हो। पूजित होकर प्रजा का अनुरञ्जन करने वाला होता हुआ तू इसमें एक क्षत्र होकर विराज। सब दिशाओं में रहने वाली प्रजाएँ तेरा आह्वान करें। तू राष्ट्र में नमनीय तथा सबको प्राप्त होने वाला है।

राजा तथा राज्य व्यवस्था के मुख्य लक्ष्यों का निर्धारण करते हुए स्वामी जी ने लिखा- 'समग्र प्रजा संबंधी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करे।' (सत्यार्थप्रकाश षष्ठ समु. पृ. १३८)

'वस्तुतः नागरिकों को विद्या, शिक्षा तथा धर्म (कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान), धनादि के संवर्धन में लगाना राज्य व्यवस्था का दायित्व है।'

सत्यार्थप्रकाश में महर्षि राज्य के उद्देश्य का निर्धारण करते हुए लिखते हैं कि- राजा और राजसभा को चार प्रकार के पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। 'राजा और राजसभा अलब्ध की प्राप्ति की इच्छा और प्राप्त की प्रयत्न से रक्षा करें। रक्षित को बढ़ावें और बढ़े हुए धन को वेद विद्या, धर्म प्रचार, विद्यार्थी, वेदमार्गोपदेशक तथा असमर्थ अनाथों के पालन में लगावें।' (सत्यार्थप्रकाश षष्ठ समु. पृ. १५४)

महर्षि दयानन्द और प्रजातंत्र

प्रायः यह धारणा बद्धमूल हो गयी है कि वैदिक काल में शासन व्यवस्था मूलतः राजतन्त्रात्मक थी। वेद में आये राजा, सम्राट, स्वराट्, अधिराट् आदि शब्दों से पाश्चात्य विद्वानों ने भी यही अभिप्राय लिया है परन्तु यह धारणा निर्मूल है। वेदादिशास्त्रों के सम्यक् अनुशीलन तथा महर्षि की मान्यता के अनुसार राजा के निर्वाचन (चुनाव) में प्रजा शामिल होती थी। वेद में प्रजा के लिए 'विश' शब्द आया है। अथर्ववेद ३/४/२ के **'त्वां विशो वृणतां राज्या य'** अर्थात् 'देश में रहने वाली सभी प्रजाएँ राज्य करने के लिए तेरा वरण करें' द्वारा राजा के निर्वाचन का आदेश सन्निहित है।

इसी प्रकार अथर्ववेद में कहा है 'राज्य के लिए पाँचों दिशाओं में रहने वाली प्रजा ने तुझे चुना है।' (अथर्व. ३-४/१,२)

महर्षि दयानन्द योग्यता तथा उसके आधार पर निर्वाचन (चयन) को इतनी प्राथमिकता देते थे कि उन्होंने इस सिद्धान्त का न सिर्फ राजनीतिक सिद्धान्तों में, वरन् अन्य सामाजिक व धार्मिक व्यवस्था में भी उपयोग किया है। यथा-

(१) महर्षि प्रणीत सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति का स्थान (Status) उसके जन्म से नहीं वरन् उसके द्वारा अर्जित की गई योग्यता (गुण-कर्म-स्वभाव) के आधार पर होगा। चाहे व्यक्ति ने निम्नतम कुल में जन्म लिया हो, अगर वह अपेक्षित योग्यता प्राप्त कर लेता है तो उसका निर्वाचन तदनुसार उच्च वर्ण में होगा (वर्ण व्यवस्था)

(२) जिस समय धार्मिक क्षेत्र में गुरुडमवाद सर्वव्यापी था। मठाधीशों का बोलबाला था। 'बाबा वाक्य प्रमाणं' की

व्यवस्था थी। उस समय स्व-स्थापित आर्य समाज में 'निर्वाचन प्रक्रिया' का सूत्रपात करना एक क्रान्तिकारी कदम था। आर्य समाज के संगठन में इकाई, प्रादेशिक व सार्वदेशिक सभी स्तरों पर अधिकारियों का चयन निर्वाचन द्वारा ही होता है।

(३) ठीक इसी प्रकार राजा का पद भी उनके लिए वंशानुगत अथवा दैवी आधार पर न होकर प्रजाजनों द्वारा निर्वाचित पद है। वे वेदों तथा तदनुकूल आर्ष ग्रन्थों में प्रजातांत्रिक पद्धति का मूल अन्वेषित करते हैं।

यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित राजधर्म व्यवस्था के अनुसार राजा की अपेक्षित गुणों के आधार पर, निर्वाचन द्वारा नियुक्ति होती थी।

ये राजानो राजकृतः सूता ग्रामण्यश्च ये। (अथर्ववेद ३/५/७)

से भी यह ध्वनित होता है कि 'राजकृत' (राजा को बनाने वाले) सभी जन निर्वाचन में भाग लेते थे। भूतपूर्व वाइस चांसलर गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार, डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार- 'Political thought of Maharshi dayanand' पुस्तक के पुरोवाक् में लिखते हैं- 'Raja of old books does not mean on hereditory king to him (Dayanand). This term has been interpreted as NIRVACHIT (निर्वाचित) SABHAPATI (Elected president of the council) by Dayanand. **The object in view is that one should not possess the absolute power of Government.'**

अर्थात् स्वामी जी की दृष्टि में प्राचीन पुस्तकों के 'राजा' शब्द का तात्पर्य वंशानुगत राजा से नहीं है। इस शब्द की विवेचना स्वामी दयानन्द ने 'निर्वाचित सभापति' (परिषद् निर्वाचित अध्यक्ष) की है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य यह है कि एक व्यक्ति को राज्य की असीमित शक्ति नहीं देनी चाहिए। इस विषय में प्रो.बी.बी. मजूमदार का मत दृष्टव्य है-

All the eminent orientalist who have written on Indo- Aryan polity are of the opinion that monarchy was the normal form of government in the Vedic age.

Dr. P. Bose says: "The Government by the king was the normal polity of the early as also of the late Aryans in India." But long before the researches of these scholars Swami Dayananda saw, references to Republicanism in the Vedas. Wherever he finds the term Raja he interprets it as Sabhapati or president. He is of opinion that no human being can occupy the position of king. God is the only king whom all should obey.

महर्षि दयानन्द प्रतिपादित राज्य व्यवस्था में एक आदर्श प्रजातांत्रिक, सम्प्रभुता सम्पन्न राज्य की परिकल्पना की गयी है जो प्रजा की स्वतंत्रता, समता, शिक्षा, विद्या, न्याय, अर्थ की रक्षा के प्रति उत्तरदायी है।

वस्तुतः दयानन्द यह समझते थे कि योग्यतम व्यक्ति कुलक्रम से नहीं, चयन से, सर्वसम्मति से निर्धारित हो सकता है, अतः उन्होंने वेदभाष्य में कहा- हे मनुष्यो! वही राजा होने योग्य है जिसे समग्र प्रजाजन स्वीकार करें-

त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः। (ऋ. २/१/१)

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में-

'इमं देवाऽअसपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमुस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा॥ (यजु. ९/४०)

की व्याख्या में लिखा है कि 'परमऐश्वर्ययुक्त राज्य और धन के पालने के लिए सम्मति करके सर्वत्र पक्षपात रहित, पूर्ण, विद्या विनययुक्त, सबके मित्र, सभापति राजा को सर्वाधीश मानके सब भूगोल को शत्रु रहित करो।' यहाँ 'सम्मति करके' स्पष्टतः निर्वाचन की ओर इशारा करता है।

अथर्व ६/१०/६९/१ में भी राजा के गुणों का वर्णन करते हुए निर्देश है कि ऐसे योग्य, माननीय को ही सभापति राजा करें।

यहाँ पर 'राजा करें' यह वाक्य विशेष ध्यान देने योग्य है। इसी प्रकार-

"वही राजा होने योग्य है जिसे समग्र प्रजाजन स्वीकार करें"

(१) सब मनुष्यों को योग्य है कि इस जगत् में धर्मयुक्त कर्मों का प्रकाश करने के लिए शुभ गुण, कर्म, स्वभाव वाले जन को राज्य पालन करने के लिए अधिकार देवें। (यजुर्वेद २०/३ महर्षि लिखित भावार्थ)

(२) जो सब मनुष्यों के मध्य में अति प्रशंसनीय होवे, वह सभापति (राजा होने) के योग्य होता है। (यजुर्वेद २०/४ महर्षिकृत भावार्थ)

(३) जो सब अंगो से शुभ कार्य करता है सो धर्मात्मा होकर प्रजा-सत्कार के योग्य उत्तम प्रतिष्ठित राजा होवे। (यजुर्वेद २०/९ महर्षिकृत भावार्थ)

इन सभी उदाहरणों में योग्यता के आधार पर राजा का निर्वाचित होना ही ध्वनित है।

सम्पादक- अशोक आर्य

HOT HAI BOSS
Dollar
ULTRA
THERMALS

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 June-2016 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

यही माता, पिता का कर्त्तव्य कर्म, परम धर्म और कीर्त्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन, और धन से विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना।

सत्यार्थप्रकाश पृ. २८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक, उदयपुर